* चन्द्र गणित प्रक्रिया *

(चन्द्र स्पष्ट करने का सरल प्रकार)

लेखक :-

मालचन्द शर्मा (इंदोरिया)

मु॰ पो॰ लछमणगढ़ जी॰ सीकर (राजस्थान)

प्रथम संस्करण २०१
आश्विन शुक्ला विजय दशमी
२०२४

मूल्य विद्वानोंकी सम्मति मात्र

पुस्तक प्राप्तिस्थान :—
मालचन्द शर्मा (इन्दोरिया)
के॰ पं॰ गंगादत्तजी चतुर्भुज इन्दोरिया
मु॰ पो॰ लछमणगढ़ जी॰ सीकर (राजस्थान)

लेखक के ज्योतिष कार्यालय (श्री रामनारायणजी शुक्ल की ठाकुरवाड़ी) ६८, काटन स्ट्रीट, कलकत्ता-७ सेभी यह पुस्तक उपलब्ध होगी।

श्रीयुतवर !
इस पुस्तक के द्वारा श्रीमताद्द महानुभाव कहांतक लाभान्वित होसकते हैं तथा यह अपनेमें कहांतक उपयुक्त हुई है तथा इसमें क्या परिवर्तनादि करनीयहै इसपे अपने विचार देनेका कष्ट करें आपके विचार मेरेलिए अमूल्य सम्पत्ति रहेंगे। लेखक.

सम्मतिदाता महानुभाव और संस्थायें

ज्योतिषाचार्य श्री काशी नाथजी भा
प्रधानाध्यापक
श्री विशुद्धानन्द स० विद्यालय
ज्योतिष विभाग कलकत्ता

,, पं० मदन गोपालजो शास्त्रो
१७८, महात्मा गांधी रोड, कल०

ज्योतिषादिपञ्चतीर्थ पं० शिवकुमारजी मिश्र
सम्पादक श्री कलकत्ता विश्वनाथ पंचांग

ज्योतिषतीर्थ श्री दीनदयालजी नाहरिया
१६१/१ महात्मा गांधी रोड,

पं० भगवानदत्ताजी शास्त्री (शाण्डिल्य)
५४/५ ॐ भवन) स्ट्राण्ड रोड

ज्योतिषाचार्य काव्यतीर्थ पं० वासुदेवजी ओझा
२६, मल्लिक स्ट्रीट, कलकत्ता

ज्योतिर्विद पं० रामगोपालजी शास्त्री
१८, मल्लिक स्ट्रीट, कलकता

,, ,, ठाकुरदत्तजी मिश्र शास्त्री
१३, बिस्कुट गली ,,

,, ,, महाबीर प्रसादजी जोशी
१३२, काटन स्ट्रीट, ,,

,, ,, ,, भागीरथजी शास्त्री
१८, मल्लिक स्ट्रीट ,,

,, ,, ,, भूरामलजी शर्मा शास्त्री
१६१/१ महात्मा गांधी रोड, कल०

,, ,, ,, केशर देवजी इन्दोरिया
१३२, काटन स्ट्रीट, ,,

पं. मानीरामजी मिश्र

॥ श्री ॥

सम्मति पत्र

श्री मारवाड़ी ब्राह्मण सभा (तदन्तर्गत विद्वत् परिषद्)

कार्यालय
७२, बड़तल्ला स्ट्रीट,
कलकत्ता-७

गणित एक बहुत गहन विज्ञान है। यह ऐसा विज्ञान है जो प्राचीन एवं अर्वाचीन परामपरा को संयुक्त करते हुए भविष्य की छाया का निर्धारण कर रहा है।

हामरे पूर्वज ऋषि महर्षि इस विज्ञान की सतत साधना के माध्यम से सब कुछ हस्ता मलक की तरह देख लेते थे। अतः इस का सम्बन्ध चर अचर से लेकर खगोल भूगोल तक परिव्याप्त है।

ऐसे विज्ञान की साधना सतत (आज भी) चलती रहे यह हमें नहीं भूलना चाहिए। हमारे भारतवर्ष में आज भी यह परम्परा किसी न किसी रूप से चल रही है जैसा का राजस्थान्तान्तर्गत लछमनगढ़ निवासी पं० मालचन्दजी शर्म्मा (इन्दोरिया) ने ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से चन्द्र गणित का आविष्कार किया है तथा चंद्र स्पष्ठ पर विचार करने का यह एक अभूतपूर्व तरीका अपनाया है जो शोध पूर्ण एवं उपादेय है।

सुविज्ञ गणित का अनुसंधान करने वाले विद्वान शर्म्माजी का यह प्रयास सराहनीय है। इसके द्वारा गणितज्ञ विद्वानो को सहायता मिलेगी यह इस सभा का विश्वास है। ऐसे प्रयास विद्वानों के द्वारा निरंतर गतिशील हो इसके लिए सभा कि हार्दिक शुभ कामना है।

आशा है प्रस्तुत पुस्तिका के प्रकाशन से पाठक अवश्य ही लाभान्वित होगें।

भवदीय-

मंत्री

दिनांक ४-१०-१९६७

वैद्य घासीराम व्यास (आयुर्वेदाचार्य)
श्री मारवाड़ी ब्राह्मण सभा (कलकत्ता)

* चन्द्र गणित प्रक्रिया *

(चन्द्र स्पष्ट करने का सरल प्रकार)

लेखक :—

मालचन्द शर्मा (इंदोरिया)

मु॰ पो॰ लछमणगढ़ जी॰ सीकर (राजस्थान)

प्रथम संस्करण २०१
आश्विन शुक्ला विजय दशमी
२०२४

मूल्य विद्वानोंकी सम्मति मात्र

पुस्तक प्राप्तिस्थान :—
मालचन्द शर्मा (इन्दोरिया)
के॰ पं॰ गंगादत्तजो चतुर्भुज इन्दोरिया
मु॰ पो॰ लछमणगढ़ जी॰ सीकर (राजस्थान)

लेखक के ज्योतिष कार्यालय (श्री रामनारायणजी शुक्ल की ठाकुरवाड़ी) ६८, काटन स्ट्रीट, कलकत्ता-७ सेभी यह पुस्तक ऊपलब्ध होगी।

प्रकाशक :--

मालचन्द शर्मा (इन्दोरीया)

के० पं० चतुर्भुजजी इन्दोरिया

२९ बी जाकड़िया स्ट्रीट, कलकत्ता-७

सम्बत् २०२४ आश्विन शुक्ला विजय दशमी ता० १३-१०-६७

प्रथम संस्कण २०१ मूल्य विद्वानो की सम्मति मात्र।

(सर्वाधिकार लेखक के अधिकार में है ।)

मुद्रक-

श्यामसुन्दर मिश्र

डि-लक्स आर्ट प्रेस

२३, ताराचन्द दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता-१

॥ श्री ॥

॥ दोशब्द ॥

भारत वर्ष ऋषियों का देश है, इस पवित्र भूमि में बहुत से आश्चर्य प्रद आविस्कारक पैदा हो चुके हैं। इनके द्वारा किये गये आविस्कारों में ही हमारा ज्योतिर्विज्ञान भी है। कहाँ भूमण्डल से अरबो खरबो योजनों की दूरी पर विचरण करने वाले ग्रह और नक्षत्र और कहां इस भूमण्डल के उपर पर्ण कुटियो में निवास करने वाले ये महापुरूष; !! न उनके पास आजके युग का टेलिस्कोप (दूर परिक्षण यन्त्र) था, न कोई अन्य साधन थे, अपने नेत्र गोलकों के द्वारा ही आकाशचारी ग्रहो नक्षत्रो के सम्बन्त्र में वे जो कुछ कह गये है, कर गये है, आज सारा विश्व उनकी कृति के सन्मुख श्रद्धासे नतमस्तक है।

यह क्रम संसार के प्रारम्भावस्था से अद्यावधि उसी क्रम से चला आरहा है। इस युग में भी ऐसे बहुत से महा पुरुष पैदा होगये हैं जिन्होने उस ऋषि प्रद, ज्योतिर्विज्ञान को आगे बढ़ाया है तथा बहुत ही सरलरूप से आकाश में कौन ग्रह कहां है ओर किस अवस्था में है इसका निरूपण गणित प्रक्रिया के द्वारा हमारे लिये किया है इन महानुभावों कि साधना का फल ही ग्रन्थों यन्त्रों ओर सारणियो मे हमारे लिये सुरक्षित है।

उपरोक्त महानुभावो की श्रेणी में (राजस्थान प्रान्तानुवर्ती) लछमन गढ़ निवासी ॐ श्री घनश्यामचन्द्र जी शास्त्री (विद्या वारिधी) श्री तारा दत्तजी शास्त्री साहित्यायुर्वेदाचार्य ॐ श्री हनुमत्प्रसादजी जोशी ज्योतिर्मातण्ड ॐ श्री गुरूमुख रायजी ढण्ड तथा श्री गंगाधरजी जोशी आदि महा मनिषियों की गणना की जा सकती हैं। स्थानिय वर्तमान कालीन इस शिक्षा के द्वारा जिविकोपार्जनकारी शिक्षाविदो की शिक्षा का सम्बन्ध इन महानुभावो से अवश्य ही सम्बन्धीत है।

मेरी शिक्षा का सम्बन्ध गुरूद्वय श्री तारादत्तजी शास्त्री और ॐ श्री हनुमत्प्रसादजी जोशी से ही अधिक है। चन्द्र गणित प्रक्रिया ज्योतिष से सम्बन्धित पुस्तिका होने के कारण इसका सम्बन्ध ॐ ब्रह्म लीन श्री हनुमत्प्रसादजी जोशी से ही अधिक है। जब गुरुवर्य की इह लौकिक लीला सम्पूर्ण होकर ब्रह्म लौकिक लीला प्रारम्भ हुई तभी से मेरे मनमें एक आलोडन सा होने लगा, मैं सोचने लगा कि गुरूवर्य की स्मृति के रक्षणार्थ कुछ किया जाना चाहिये, लेकिन उत्पाद्यन्ते विलीयन्ते दरिद्राणां मनोरथाः के अनुसार अल्पज्ञता के कारण मनोरथों की लहरें उठती गयी और मनमें ही विलीन होती गयीं

एकदिन, अकस्मात हो मनमें आया कि गुरूवर्य ने चन्द्र स्पस्ट के सम्बन्ध में प्राचोनता से समन्वय रखते हुए जो स्वतन्त्र और सरल प्रक्रिया का निर्माण की याथा क्योन, उसे ही सारणि क्रिया में आवद्ध कर पुस्तक रूप में प्काशित किया जावे; यदि ऐसा होता है तो यह उनकी स्मृति का सबसे बडा चिन्ह रहेगा।

लेकिन यह कार्य भी बहुत कठिन था जो मेरे जैसे अल्पज्ञ के द्वारा कैसे पूर्ण हो यह एक समस्या थी लेकिन यर्तकिंचित गुरू कृपा अवश्य ही थी जिसने यह कार्य सम्पादन की अनवरत प्रेरणा दी उसी प्रेरणा से प्रेरित होकर यह कार्य प्ारम्भ किया और आज यह पूर्ण या अपूर्ण जैसा भी पूर्ण हुआ है आपको सेवा में समुपस्थित है।

यह सर्व विदित है कि चन्द्रमा अत्यधिक शिघ्र गति से चलता है जिसका एक पल में ही १२ पल से १५ पल परमित भोग हो जाता हैं। सारणी के निर्माण में गणित खण्डो में कहीं एक पल अल्प और कहीं एक पल अधिक हो जाना स्वभाविक है अतः इसके कारण कुछ पलात्मक अन्तर रह सकता है।

जहाँ तक मेरा अनुमान हैं इस क्रिया के द्वारा और गणित क्रिया के द्वारा आनयन किये हुए चन्द्र स्पष्ट में २-३ पलो का अन्तर दिखाई दे सकता है। अन्तर अल्प से अल्प रहे इसका ध्यान रखते हुए ही इस प्रक्रिया का निर्माण किया गया है। जहां नक्षत्रपाद पूर्ण हुआ हैं वहां पल कोस्टक में विपलो तक का भी मान सम्मिलित किया गया है। इस पुस्तिका को व्यापार बुद्धि से प्रकाशित नहीं किया जा रहा है। केवल गुरूवर्य की स्मृति रक्षा ही इसका मूल उद्येश्य है। इसका प्रथम संस्करण केवल २०० प्रतियों का विज्ञजनो की सेवा में अर्पण कर दिया जायेगा।

विज्ञ महानुभावो के द्वारा प्रेषित सुझावों के अधार पर इसे पुनः नवीन रूप से प्रकाशित किया जाये, यह मेरी अन्तरिक इच्छा है। विज्ञ महानुभावों से यह प्रार्थना की जाती है की इसके उपर अपने अपने सुझाव प्रेषित कर मेरे उत्साह को बढ़ावें। परिस्थिति वश पुस्तक का गणित भाग लिथो प्रेस में छपाना पड़ा अतः अक्षरों में स्पष्टता नहीं है पुस्तक के प्रकाशन में प्रेस प्रूफ के कारण या मेरे द्वारा ही कोई अशुद्धता रह गई हो तो क्षमा प्रार्थना हैं। यदि २-३ पल से अधिक अन्तर दृष्टि गोचर होतो वहां कोष्टकों में अवश्य ही कोई अशुद्धता बनी हुई है ऐसा मानते हुए कोष्टक शुद्ध कर लेना अत्यावश्यक है। इसकी सूचना मेरे को प्राप्त होने पर इसका समुचित समाधान प्रेषक के पास भेजने की चेष्टा करूगां। इस प्रक्रिया का व्यवहार प्रथमावस्था में कुछ कष्ट प्रद रहेगा किन्तु अभ्यास हो जाने पर आपके परिश्रम में अवश्य ही लाघवता प्रदान होगी। प्रथमावस्था में प्रक्रिया के द्वारा स्पष्ट चन्द्रमा को गणित से भी स्पष्ट करके देख लेना अच्छा रहेगा। ऐसा करते रहने पर प्रक्रिया को समझने में सहायता मिलेगी। इतना कहते हुए यह तुच्छ सेवा विज्ञ महानुभावों की सेवा में अर्पण कर रहा हुं। इति॥

आश्विन शुक्ला
विजय दशमी २०२४

पं० माल चन्द शर्मा (इन्दोरिया)
लछमनगढ़ निवासी

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

* ॥ अथ मंगला चरणम् ॥ *

। लम्बोदरं हृदी ध्यात्वा; नत्वादेवीं सरस्वतोम् ।
। पित्रोः पाद युगंस्मृत्वा; चन्द्रस्य गणितं ब्रुवे ॥१॥

* ॥ वक्तव्य ॥ *

अस्याँ क्रियायां कृत सोम शुद्धौ सम्पूर्णतां याति पलान्तरेण ।
पाद प्रपूर्तौंतु विधाय शुद्धिम् व्यवहार्यंताम् विज्ञ महानुभावः ॥२॥

श्री लम्बोदर भगवान का हृदय में ध्यान करते हुए, तथा श्री सरस्वती देवी को नमस्कार करते हुए पित्रृद्वय पालक ॐ गगांदत्तजी, जनक श्री चतुर्भुजजी के चरणों का स्मरण करते हुए, इस चन्द्र गणित प्रक्रिया को कहता हुं ।

मेंरे द्वारा कही गई इस क्रिया के आधार पर की गई सोम शुद्धि में पलान्तर से ही सम्पूर्णता होगी, जिसको नक्षत्र पाद पूर्णावस्था में पूर्ण करके अर्थात वहां ३ अंश २० घटी का मान रखते हुए विज्ञ महानुभावों को इसका व्यवहार करना है ।

॥ $भयात भभोग आनयन ॥

प्रक्रिया के व्यवहार में, भयात और भभोग का प्रयोजन होता है अतः सर्वप्रथम भयात भभोग का आनयन कहा जारहा है। नक्षत्र के पूर्णमान का नाम भभोग और इस पूर्णमान मे से इस्ट काल पर्य्यन्त नक्षत्र के भुक्तभान का नाम ही भयात कहा गया है।

गत नक्षत्र घटियों को (जो पचांङ्ग में लिखा हुआ है) ६० मे से हीन कर इष्ठ काल की घटियों का योग करने पर भयात होता है, तथा गत नक्षत्र की घटियों को वर्तमान नक्षत्र, घटियों में योग करने पर भभोग होता हैं। किन्तु यदाकदा यह क्रिया भ्रमोत्पादक हो जाती है और वहां गणितज्ञों को स्वबुद्धि का सहारा लेना पड़ जाता है। यथा ॥ उदाहरण ॥

सम्बत् ॥२०२४॥ श्रावण कृष्णा प्रतिपद -१- शनिवार इष्ट १३॥५५ ऊत्तराषाढ़ा नक्षत्र २॥१७ परदिन श्रवण नक्षत्र ३॥४६॥ अतः यहां ऊत्तराषाढ़ा नक्षत्र ही गत नक्षत्र है (इष्ट से अल्प ताके कारण) अब यहां गत नक्षत्रमान २॥१७ को ६० मेसे हीन किया तो ५७॥४३ हुआ इसमें इष्ट १३॥५५ का योग किया तो ७१॥३८ भयात हुआ है तथा ६० मेसे हीन गत नक्षत्रमान ५७॥४३ मे वर्तमान श्रवण नक्षत्रमान ३॥४६ का योग किया तो भभोग ६१॥३२ हुआ है। यहां जरा ध्यानसे देखा जावे तो जहां भभोग ही ६१॥३२ है वहां भयात ७१॥३८ कैसे हो पायेगा अतः यहां भयात ७१॥३८ को पुनः ६० मेंसे हीन करने की आवश्यकता होगी। जब पुनः हमने ऐसा किया अर्थात् ७१॥३८ को ६० मेसे हीन किया तो ११॥३८ रहा और यही वास्तव में भयात हुआ है अहां भयात ११॥३८ और भभोग ६१॥३२ सिद्ध हुआ है। अब यह देखना है कि इस भयातऔर भभोग के आधार पर बालक का जन्म, नक्षत्र के किस पाद की कितनी घटी पल और विपलो में है क्योंकि आगे की क्रिया इसी पर निर्भर है पूर्वोक्त भयात भभोग के अनयन मे यदाकदा कुछ भ्रमोत्पादन सा हो जाता हैं यह पूर्व में ही कहा जा चुका है अतः यहां गुरुवर्यंकृत अन्य प्रकार से भयात भभोग साधन किया जारहा है यथा

$ इष्ट साधन तथा भयात भभोग और चन्द्र स्पष्ट गुरुजनों से सीखना चाहिये ।

सूर्यादि बार क्रम से इष्ठ-दिन जो बार हो, उस बार की संख्या सहित इष्ट काल ऊपर भाग मे लिखे, और नीचे बार के सहित गत नक्षत्र मान लिखें, दोनो का अन्तर करे, यह भयात होगा, तथा बार के सहित वर्तमान नक्षत्रमान ऊपर को तरफ में लिख कर, बार सहित गत नक्षत्रमान नीचे लिखकर, दोनो का अन्तर करें, यही भभोग होगा। (एक अवशेष वार को ६० घटी समझे)

॥ ऊदाहरण ॥ यथा

ऊपरोक्त दिन, शनिवारः इष्ठ १३॥५५ गत नक्षत्र २॥१७ परदिन (सूर्यबार) वर्तमान नक्षत्र ३॥४६ अतः पहले ऊपर तरफ मे बार के सहित इष्ट ७॥१३॥५५ नोचे बार सहित गत नक्षत्रमान ७॥२॥१७ दोनो का अन्तर यथा

७॥१३॥५५
७॥ २॥१७
००।११॥३८ भयात

उपर भाग मे वर्तमान नक्षत्र १॥३॥४६ नीचे गत नक्षत्र ७॥२॥१७ दोनो का अन्तर यथा

१॥३॥४६
७॥२॥१७
१॥१॥३२ भभोग (६१॥३२)

यह क्रिया सरल है ओर भ्रमोत्पादक नही है।

॥ चन्द्रानयन प्रकार ॥

भयात को (पलात्मक) ६० से गुणा कर, (पलात्मक) भभोग का भाग दें और प्राप्त फल मे गत नक्षत्र संख्या (६० गुणित) का योग करें, योगफल को २ से गुणा कर, ९ से भाग देने पर अंशादि फल प्राप्त होगा। अंशो को ३० से भाजित करने पर, राश्यात्मक चन्द्रस्पष्ट होता है। लेकिन जहां भयात नही है अर्थात नक्षत्र का पूर्णमान ही जहां इष्ट समय है वहां पूर्वोक्त क्रिया के द्वारा चन्द्रानयन मे कुछ असुविधा सी होगी, वहाँ आपको नक्षत्र की पूर्णता मे १३ अंश और २० घटी ही मनना होगा। इसी सिद्धान्त के ऊपर गुरुवर्य ने चन्द्र साधन के लिए स्वतन्त्र क्रिया का निरूपण किया है यथा

पलात्मक भयात को १३॥२० से गुणा कर, पलात्मक भभोग का भाग देने से फल अंश घटी और पल संज्ञक होगा। इसके पश्चात केवल गत नक्षत्र संख्या को १३॥२० से गुणा करने मात्र से अंश और घटि फल होगा। दोनो फलो को यथास्थान योग कर, अंशो में ३० का भाग देने की अवस्था मे राश्यात्मक चन्द्रमा होगा इसी सिद्धान्त के उपर ही इस चन्द्रगणित प्रक्रिया का निर्माण किया गया है। इस प्रक्रिया के द्वारा नक्षत्र की पूर्णावस्था मे अर्थात भयात के अभाव मे भी सुगमता पूर्वक क्रिया सम्पादन की जा सकेगी (अर्थात्) नक्षत्र के चतुर्थ पाद मान मे ३ अंश २० घटी का योग ही स्पष्ठ चन्द्रमा होगा।

॥ प्रक्रिया व्यवहार विधान ॥

इस प्रक्रिया को चार भागो में विभक्त किया गया है=

प्रथम भाग में अश्विन्यादि नक्षत्रों के सन्मुख उनके एकादि पादों, का मान पाद की प्रारंभावस्था का लिखा गया हैं। (जो क्रमशः राश्यात्मक है)

द्वितीय भागमे भभोग ५५॥०० से प्रारंभकर; भभोग ६७ पर्य्यन्त प्रत्येक १०=२० पलोंके अन्तर से एकादि घटियोंका मान लिखा गया है (जो क्रमश: अंशात्मक है) इसका व्यवहार भयात घटियोंके अनुसार करना है।

तृत्रिय भागमे ऊसी क्रमेण, भभोग का एकादि पलमान लिखा गया है (जो क्रमशः घटयात्मक है) इसका व्यवहार भी भयात के पलानुसार करना है।

भाग चतुर्थ मे दो दो पंक्तियों के मध्य मे एकादि वर्धित भभोगपल का मान लिखा गया है इसका व्यवहार भभोग की वर्धित पलोंके अनुसार करना है यह पलात्मक है और सदाही ऋण संज्ञक रहेगा।

भाग १ भाग २ और भाग ३ का फल, यथास्थान योग करना, और प्रयोजनानुसार भाग ४ का फल वियोग कर देना ही स्पष्ट चन्द्रमा होगा।

यहां नक्षत्र के पादमान में विपलों का भी व्यवहार करें और वहां एक पल का अर्धांशं या चतुर्थांशं भी व्यवहार में लेतें रहें।

जैसे भभोग—५६॥५० भयात ४८॥५१ अत: यहां नक्षत्र का एक एक पाद १४॥१२॥३० इस अनुपात से बालक के जन्म समय में नक्षत्र का ३ पाद पूर्ण होकर ४ चतुर्थपाद की ६ घटी १३ पल और ३० विपल है तो यहां क्रिया करते समय कृपाया ३० विपलो का मान (१ पल का अर्धांशं) भी व्यवहार में लेना चाहिए। ऐसे ही १५॥४५ विपलादि का मान भी व्यवहार मे ले लेना चाहिये।

यह सर्वदा ही ध्यान मे रखें की प्रक्रिया के व्यवहार मे पर पंक्ति का व्यवहार न कर पूर्व पंक्ति का ही व्यवहार करना अच्छा रहेगा जैसे भभोग ५६॥५७ है तो आपको यहां भभोग ५६॥५० की पंक्ति का व्यवहार करना चाहिए और इसके द्वारा स्पष्ठ चंद्र मे से प्रक्रिया भाग ४ से भभोग का बर्धित पल ७ का भयात घटी के अनुसार पलमान लेकर अन्तर कर देना चाहिए।

प्रक्रिया भाग चतुर्थ मे अन्तर फल एक के अलावा अन्यत्र अनुमानित ही लिया गया है। इस कारण प्रक्रिया के द्वारा और गणित क्रिया के द्वारा समागत चन्द्र स्पष्ट मे कुछ पलात्मक अन्तर रह सकता है। क्रिया के मध्य मे तो २-३ पल कोई विशेष महत्व नही रखते किन्तु नक्षत्र की पाद पूर्णावस्था होती हो वहां यह अन्तर अवश्य ही महत्वपूर्ण हैं अतः वहां स्वल्पान्तर रहे तो उसे अल्प या अधिक करते हुए ३ अंश और २० घटी पूर्ण रखें।

॥ पंक्ति सोधन क्रम ॥

क्रिया भाग १

अश्विनी नक्षत्र के २ पाद कोष्टक में ३ अंश २० घटी के अंक है। जिसे क्रम से योग करें।

क्रिया भाग २-३

(२) पंक्तियों के १ घटी के अंशादि फलों को पाद पूर्ण घटी पर्यन्त योग करें। (३) वैसे ही पल कोष्टक क्रिया भी समझें।

द्वितीय भागमे भभोग ५५॥०० से प्रारंभकर; भभोग ६७ पर्य्यन्त प्रत्येक १०=१० पलोंके अन्तर से एकादि घटियोंका मान लिखा गया है (जो क्रमशः अंशात्मक है) इसका व्यवहार भयात घटियोंके अनुसार करना है।

तृत्रिय भागमे ऊसी क्रमेण, भभोग का एकादि पलमान लिखा गया है (जो क्रमशः घटयात्मक है) इसका व्यवहार भी भयात के पलानुसार करना है।

भाग चतुर्थ मे दो दो पंक्तियों के मध्य मे एकादि वर्धित भभोगपल का मान लिखा गया है इसका व्यवहार भभोग की वर्धित पलोंके अनुसार करना है यह पलात्मक है और सदाही ऋण संज्ञक रहेगा।

भाग १ भाग २ और भाग ३ का फल, यथास्थान योग करना, और प्रयोजनानुसार भाग ४ का फल वियोग कर देना ही स्पष्ट चन्द्रमा होगा।

यहां नक्षत्र के पादमान मे विपलों का भी व्यवहार करें और वहां एक पल का अर्धांशं या चतुर्थाशं भी व्यवहार में लेतें रहें।

जैसे भभोग—५६॥५० भयात ४८॥५१ अतः यहां नक्षत्र का एक एक पाद १४॥१२॥३० इस अनुपात से बालक के जन्म समय में नक्षत्र का ३ पाद पूर्ण होकर ४ चतुर्थपाद की ६ घटी १३ पल और ३० विपल है तो यहां क्रिया करते समय कृपया ३० विपलो का मान (१ पल का अर्धांशं) भी व्यवहार में लेना चाहिए। ऐसे ही १५॥४५ विपलादि का मान भी व्यवहार मे ले लेना चाहिये।

यह सर्वदा ही ध्यान मे रखें की प्रक्रिया के व्यवहार मे पर पंक्ति का व्यवहार न कर पूर्व पंक्ति का ही व्यवहार करनां अच्छा रहेगा जैसे भभोग ५६॥५७ है तो आपको यहां भभोग ५६॥५० की पंक्ति का व्यवहार करना चाहिए और इसके द्वारा स्पष्ठ चन्द्र मे से प्रक्रिया भाग ४ से भभोग का बर्धित पल ७ का भयात घटी के अनुसार पलमान लेकर अन्तर कर देना चाहिए।

प्रक्रिया भाग चतुर्थ मे अन्तर फल एक के अलावा अन्यत्र अनुमानित ही लिया गया है। इस कारण प्रक्रिया के द्वारा और गणित क्रिया के द्वारा समागत चन्द्र स्पष्ट मे कुछ पलात्मक अन्तर रह सकता है। क्रिया के मध्य में तो २–३ पल कोई विशेष महत्व नही रखते किन्तु नक्षत्र की पाद पूर्णावस्था होती हो वहां यह अन्तर अवश्य ही महत्वपूर्ण हैं अतः वहां स्वल्पान्तर रहे तो उसे अल्प या अधिक करते हुए ३ अंश और २० घटी पूर्ण रखें।

॥ पंक्ति सोधन क्रम ॥

क्रिया भाग १

अश्विनी नक्षत्र के २ पाद कोष्टक में ३ अंश २० घटी के अंक है। जिसे क्रम से योग करें।

क्रिया भाग २-३

(२) पंक्तियों के १ घटी के अंशादि फलों को पाद पूर्ण घटी पर्यन्त योग करें। (३) वैसे ही पल कोष्टक क्रिया भी समझें।

क्रिया भाग ४

क्रिया भाग २ की ऊपर पंक्ति मे से नीचे की पंक्ति का ६ भाजीत अन्तर उपर से नीचे की तरफ मे योग करें।

॥ प्रक्रिया के द्वारा चन्द्र स्पष्ठ का उदाहरण ॥

पूर्वोक्त विधि से आनयन किया गया भयात (श्रवण नक्षत्र) ११॥३८ भभोग ६१॥ ३२ अतः भयात और भभोग के अधार पर बालक का जन्म श्रवण नक्षत्र के प्रथमपाद की ११ घटी और ३८ पलो पर है। इस भयात भभोगा धार पर चन्द्र गणित प्रक्रिया के द्वारा चन्द्र स्पष्ट किया जा रहा है। यथा--

	रा०	अं०	क०	वि०
१- क्रिया भाग प्रथम श्रवण नक्षत्र का प्रथम पाद मान—	॥ ६ ॥	१०॥	००॥	००
		अं०	घ०	प०
२- क्रिया भाग द्वितीय भभोग ६१ में से ६१॥३० की पंक्तियों कामान (भयात घटी ११ के अनुसार)—	+ ॥	२॥	२३॥	७
		घ०	प०	वि०
३- क्रिया भाग त्रितीय (पंक्ति क्रिया २ के सन्मुख) से भभोग ६१॥३० मे (भयातानुसार) ३८ पलकमान—	+ +॥	८॥	१४॥	२३

तीनो फलो को यथास्थोन योग किया यथा—

१ ६॥१०॥००॥००
२ +॥२॥२३॥७
३ +॥+ ८॥१४॥२३
___
६॥१२॥३१॥२१॥२३ ($)

यहां हमने क्रिया भभोग ६१॥३० की पंक्ति से की है लेकिन भभोग ६१॥३२ है अत; वर्धित २ पलों का अन्तर भयात ११॥३८ के अनुसार क्रिया भाग ४ से ६ पल. इस ६ पल को ६॥१२॥३१॥२१॥ में से यथास्थान ऋण किया गया ६॥१२॥३१॥२१

(ऋण)

स्पष्ट चन्द्र ६॥१२॥३१॥१५ सिद्ध हुआ है। इसो उदाहरण के उपर गणित साधित चन्द्र स्पष्ट ६॥१२॥३१॥१४ है दोनो में अन्तर केवल १ पल।

ऊदाहरण—२

घ० प० वि०

जन्म नक्षत्र मघा भयात ५५॥५७ (प्रथमपाद पूर्ति १३॥ ५६॥ १५) बालक का जन्म मघा के

$ 'अर्धाधिक्यं एकं ग्राहयं अर्धाल्पं त्याज्यं।

चतुर्थपाद की १३ घटी ३१ पल १५ विपल मे। अतः क्रिया भाग १ मघा का चतुर्थ पादमान ४॥१०॥००॥००

क्रिया भाग २ भभोग ५५॥५० की पंक्ति में—

१३ घटी का मान	+॥३॥६॥१७॥
क्रिया भाग ३ भभो ५५॥५० की पंक्ति में—	
३१ पलों का मान तथा वहां से ही	+॥+॥०७॥२४॥६
१५ विपलो का मान एक पल का चतुर्थांश	+॥+॥+॥३॥३४
तीनो का यथास्थान योगफल	४॥१३॥१३॥४४॥४३

क्रिया भाग ४ से वर्धित भभोगपल ७ का भयात १३ घटी ३१ पल के अनुसार अन्तर पल — २८

स्पष्ट चन्द्रः ४॥१३॥१३॥२७

ऊपरोक्त ऊदाहरण २ के आधारपर गणित साधित चन्द्रमा; ४॥१३॥१३॥१८ है दोनो चन्द्रमानों मे अन्तर १ पल मात्र है।

ऊदाहरण ३

जन्मनक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी भयात ४८॥५१॥ भभोग ५६॥५० प्रथम पाद पूर्ति (२४॥२२॥३०) बालक का जन्म चतुर्थ पाद की ६ घटी १३ पल और ३० विपल में

क्रिया भाग १ पूर्वाफल्गुनी के ४ चतुर्थपाद का मान	४॥२३॥२०॥००
क्रिया भाग २ में से भभोग ५६॥५० की पंक्ति में से भयातानुसार ६ घटी का मान	+॥१॥२४॥२७॥
क्रिया भाग ३ मे से भभोग ५६॥५० को पंक्ति से भयातानुसार १३ पल और ३० विपल का मान	+॥+॥३॥१०
तीनो का यथास्थान योगफल स्पष्ट चन्द्रमा	४॥२४॥४७॥३७

यहां भभोग ५६॥५० है और क्रिया भी ५६॥५० को पंक्ति से हुई है अतः यहां वर्धित पल नही होने के कारण ऋण संस्कार की आवश्यकता नही रही और ४॥२४॥४७॥३७ ही स्पष्ट चन्द्रमा रहा है।

इसी उदाहरण के ऊपर गणित साधित चन्द्रमा भी ४॥२४॥४७॥३७ ही हुआ है यहां गणित क्रिया और प्रक्रिया की क्रिया दोनों ही बराबर रही है।

ऊपरोक्त ऊदाहरण त्रय को देखने पर प्रक्रिया की क्रिया और गणित क्रिया मे स्वल्पान्तर ही रहा है। जो स्वल्पान्तरत्वात् न दोषः के अनुसार दोष युक्त न मानते हुए क्षमा करें।

आगे प्रक्रिया भाग प्रारंभ हो रहा है व्यवहार से पूर्व इसे अच्छी तरह से देखें और समझे तत्पश्चात् ही व्यवहार मे लें।

❁ श्री शुभम् ❁

जिनके प्रेरणा स्वरूप स्वच्छ वारिश्रोतसे मेरा मानस सर सर्वदा पूर्ण होते रहा और होतारहेगा ऐसे परम सहयोगी ज्योतिर्विद पं॰ श्री ठाकुरदत्तजी शास्त्री का पत्र :—

❁ शुभ सन्देश ❁

चन्द्र गणित प्रक्रिया नित्य निरन्तर सफलता के पथमे अग्रसर होती रहे यह मेरी हार्दिक शुभ कामना है।

ह॰ ठाकुरदत्त मिश्र शास्त्री

चन्द्र गणित – प्रक्रिया = भाग-१

अथ:
॥ गणित भाग प्रारम्भ: ॥

स.	नक्षत्र.	१.पाद.प्रा. रा. अं. क. वि.	२.पाद.प्रा. रा. अं. क. वि.	३.पाद.प्रा. रा. अं. क. वि.	४.पाद.प्रा. रा. अं. क. वि.
		x x x x	x x x x	x x x x	x x x x
१	अश्विनी	००॥०३॥००॥००	००॥०३॥२०॥००	००॥०६॥४०॥००	००॥१०॥००॥००
२	भरणी	००॥१३॥२०॥००	००॥१६॥४०॥००	००॥२०॥००॥००	००॥२३॥२०॥००
३	कृत्तिका	००॥२६॥४०॥००	०१॥००॥००॥००	०१॥०३॥२०॥००	०१॥०६॥४०॥००
४	रोहिणी.	०१॥१०॥००॥००	०१॥१३॥२०॥००	०१॥१६॥४०॥००	०१॥२०॥००॥००
५	मृगशीर्ष	०१॥२३॥२०॥००	०१॥२६॥४०॥००	०२॥००॥००॥००	०२॥०३॥२०॥००
६	आर्द्रा	०२॥०६॥४०॥००	०२॥१०॥००॥००	०२॥१३॥२०॥००	०२॥१६॥४०॥००
७	पुनर्वसु	०२॥२०॥००॥००	०२॥२३॥२०॥००	०२॥२६॥४०॥००	०३॥००॥००॥००
८	पुष्य.	०३॥०३॥२०॥००	०३॥०६॥४०॥००	०३॥१०॥००॥००	०३॥१३॥२०॥००
९	आश्लेषा.	०३॥१६॥४०॥००	०३॥२०॥००॥००	०३॥२३॥२०॥००	०३॥२६॥४०॥००
१०	मघा.	०४॥००॥००॥००	०४॥०३॥२०॥००	०४॥०६॥४०॥००	०४॥१०॥००॥००
११	पूर्वा.फ.	०४॥१३॥२०॥००	०४॥१६॥४०॥००	०४॥२०॥००॥००	०४॥२३॥२०॥००
१२	उत्तरा.फ.	०४॥२६॥४०॥००	०५॥००॥००॥००	०५॥०३॥२०॥००	०५॥०६॥४०॥००
१३	हस्त.	०५॥१०॥००॥००	०५॥१३॥२०॥००	०५॥१६॥४०॥००	०५॥२०॥००॥००
१४	चित्रा.	०५॥२३॥२०॥००	०५॥२६॥४०॥००	०६॥००॥००॥००	०६॥०३॥२०॥००
१५	स्वाति.	०६॥०६॥४०॥००	०६॥१०॥००॥००	०६॥१३॥२०॥००	०६॥१६॥४०॥००
१६	विशाखा.	०६॥२०॥००॥००	०६॥२३॥२०॥००	०६॥२६॥४०॥००	०७॥००॥००॥००
१७	अनुराधा.	०७॥०३॥२०॥००	०७॥०६॥४०॥००	०७॥१०॥००॥००	०७॥१३॥२०॥००
१८	ज्येष्ठा.	०७॥१६॥४०॥००	०७॥२०॥००॥००	०७॥२३॥२०॥००	०७॥२६॥४०॥००
१९	मूल.	०८॥००॥००॥००	०८॥०३॥२०॥००	०८॥०६॥४०॥००	०८॥१०॥००॥००
२०	पूर्वा.षा.	०८॥१३॥२०॥००	०८॥१६॥४०॥००	०८॥२०॥००॥००	०८॥२३॥२०॥००
२१	उत्तरा.षा.	०८॥२६॥४०॥००	०९॥००॥००॥००	०९॥०३॥२०॥००	०९॥०६॥४०॥००
२२	श्रवण.	०९॥१०॥००॥००	०९॥१३॥२०॥००	०९॥१६॥४०॥००	०९॥२०॥००॥००
२३	धनिष्ठा.	०९॥२३॥२०॥००	०९॥२६॥४०॥००	१०॥००॥००॥००	१०॥०३॥२०॥००
२४	शततारा.	१०॥०६॥४०॥००	१०॥१०॥००॥००	१०॥१३॥२०॥००	१०॥१६॥४०॥००
२५	पूर्वा.भा.	१०॥२०॥००॥००	१०॥२३॥२०॥००	१०॥२६॥४०॥००	११॥००॥००॥००
२६	उत्तरा.भा.	११॥०३॥२०॥००	११॥०६॥४०॥००	११॥१०॥००॥००	११॥१३॥२०॥००
२७	रेवती.	११॥१६॥४०॥००	११॥२०॥००॥००	११॥२३॥२०॥००	११॥२६॥४०॥००

चन्द्र गणित. प्रक्रिया. भाग. २

भभोग.५५।।०० से ५५।।५० पर्यन्त का एकादि घटीक (भयात के अनुसार व्यवहार करें)

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	५५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं.
१४	२९	४३	५८	१२	२७	४१	५६	१०	२५	३९	५४	०९	१०	घ.
३२	०५	३८	१०	४३	१६	४९	२१	५४	२७	५९ (५८)	३२	०६ (०५)	५४	प.

भभोग. ५५।।१०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	५५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं
१४	२९	४३	५८	१२	२७	४१	५६	११	२५	३९	५४	०८	११	घ.
३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	००	०१	३१	२९	प.

भभोग. ५५।।२०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	५५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं.
१४	२८	४३	५७	१२	२६	४१	५५	[illegible]	२४	३८	५२	०७	१२	घ.
२८ (२७)	५४	२२	४९	१६	४४	१२	३९	०७	३४	०२	२९	५७	०३	प.

भभोग. ५५।।३०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	५५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं.
१४	२८	४३	५७	१२	२६	४०	५५	०९	२४	३८	५२	०७	१२	घ.
२४	५८	१४	४०	०४	३०	५४	१९	४३	०९	३४	५९	२४	३६	प.

भभोग. ५५।।४०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	५५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं.
१४	२८	४३	५७	११	२६	४०	५४	०९	२३	३८	५२	०६	१३	घ.
२२	४४	०६	२९	५१	१३	२५	५८	२०	४२	०४	२७	५०	१०	प.

भभोग. ५५।।५०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	५५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं.
१४	२८	४२	५७	११	२५	४०	५४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०६	१३	घ.
१९	३८	५८	१८	३८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१७	४५	प.
					५८	१७	३७	५६	१६	३६				

चन्द्र गणित. प्रक्रिया. भाग.

भभोग.५५।।[illegible] कापकादि पूर्ण... भयात के अनुसार व्यवहार करें

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०७	१४	घ
१४	२९	४३	५८	१२	२५	३८	१६	३२	प.
३२	०५	३८	१०	४३	२७	११	२२ (२३)	००	वि.

भभोग. ५५।।१०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०७	१४	घ.
१४	२९	४३	५८	१२	२५	३७	१५	३०	प
३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	००	वि

भभोग. ५५।।२०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०७	१४	घ
१४	२८	४३	५७	१२	२४	[illegible]	१३	२६	प
२७	५४	२२	४९	१७	३४	५१	४२	००	वि.

३८

भभोग. ५५।।३०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०७	१४	घ.
१४	२८	४३	५७	१२	२४	३६	१२	२४	प
२४	५०	१४	४०	०४	०९	१३	२६	००	वि

भभोग. ५५।।४०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०७	१४	घ
१४	२८	४३	५७	११	२३	३५	११	२२	प
२२	४४	०६	२९	५१	४२	३३	०६	००	वि

भभोग. ५५।।५०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१४	घ
१४	२८	४२	५७	११	२२	३४	०९	१५	प
१९	३९	२५	१८	३८	१७	५५	५०	०९	वि

चन्द्र गणित. प्रक्रिया. भाग. २

भभोग ५५।।०० से ५५।।५० पर्यन्त का एकादि फल (भयात के अनुसार व्यवहार करें)

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	५५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं.
१४	२९	४३	५८	१२	२७	४१	५६	१०	२५	३९	५४	०८	१०	घ.
३५	०५	३८	१०	४३	१६	४८	२१	५४	२७	५९ (५८)	३२	०६ (०५)	५४	प.

भभोग. ५५।।१०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	५५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं.
१४	२९	४३	५८	१२	२७	४१	५६	११	२५	३८	५४	०८	११	घ.
३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	००	०१	३१	२५	प.

भभोग. ५५।।२०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	५५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं.
१४	२९	४३	५७	१२	२६	४१	५५	[illegible]	२४	३८	५२	०७	१२	घ.
२४ (२७)	५४	२२	४९	१७	४४	१२	३९	०७	३४	०२	२९	५७	०३	प.

भभोग. ५५।।३०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	५५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं.
१४	२८	४३	५७	१२	२६	४०	५५	०९	२४	३८	५२	०७	१२	घ.
२४	५०	१४	४०	०४	३०	५४	१९	४३	०९	३४	५९	२४	३६	प.

भभोग. ५५।।४०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	५५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं.
१४	२८	४३	५७	११	२६	४०	५४	०९	२३	३८	५२	०६	१३	घ.
२२	४४	०६	२९	५१	१३	२५	५८	२०	४२	०४	२७	५०	१०	प.

भभोग. ५५।।५०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	५५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं.
१४	२८	४२	५६	११	२५	[illegible]	५४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५१	०६	१२	घ.
१९	३९	५९	१८	३८	[illegible]	[illegible]	३७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५६	१७	३५	प.
					५८	१७	३७	५६	१६	३५				

चन्द्र गणित. प्रक्रिया. भाग.

भभोग. ५५।।५ कापकादि फल भयात के अनुसार व्यवहार करें

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०७	१४	घ
१४	२९	४३	५८	१२	२५	३८	१६	३२	प.
३२	०५	३८	१०	४३	२७	११	२२ (२३)	००	वि.

भभोग. ५५।।१०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०७	१४	घ.
१४	२८	४३	५८	१२	२५	३७	१५	३०	प
३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	००	वि

भभोग. ५५।।२०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०७	१४	घ
१४	२८	४३	५७	१२	२४	३९	१३	२६	प
२४	५४	२२	४९	१७	३४	५१	४२	००	वि

भभोग. ५५।।३०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०७	१४	घ.
१४	२८	४३	५७	१२	२४	३६	१२	२४	प
२४	५०	१४	४०	०४	०९	१३	२६	००	वि

भभोग. ५५।।४०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०७	१४	घ
१४	२८	४३	५७	११	२३	३५	११	२२	प
२२	४४	०६	२९	५१	४२	३३	०६	००	वि

भभोग. ५५।।५०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१३	घ
१४	२८	४२	५६	११	२२	३४	०९	१९	प
१९	३९	५९	१८	३८	१६	५५	५०	००	वि

चन्द्रगणित प्रक्रियाः भाग २

भभोग. ५६॥००से. ५६॥५० पर्यन्त की एकादि घटी-फल (भयात के अनुसार व्यवहार करें)

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४		
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	०३		अं.
१४	२८	४२	५६	११	२५	४०	५४	०८	२२	३६	५१	०५	२०		घ.
१४	३४	५१	०८	२५	४२	००	१७	३४	५१	०८	२५	४३	००		प.

भभोग ५६॥१०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं.
१४	२८	४२	५६	११	२५	३९	५३	०८	२२	३६	५०	०५	१९	००	घ.
१४	२९	४३	५८	१४	२८	४३	५७	१२	२६	४१	५५	१०	२५	५५	प.

भभोग. ५६॥२०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
००	००	००	००	००	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं:
१४	२८	४२	५६	११	२५	३९	५३	०७	२२	३६	५०	०४	१८	०१	घ.
१२	२४	३६	४८	००	१२	२४	३६	४८	००	१२	२४	३६	४८	२२	प.

भभोग. ५६॥३०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं.
१४	२८	४२	५६	१०	२४	३९	५३	०७	२१	३५	४९	०४	१८	०१	घ.
०९	१८	२८	३७	४७	५६	०६	१६	२५	३५	४४	५४	०४	१४	४५	प.

भभोग. ५६॥४०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०३	०३	०३	००	अं.
१४	२८	४२	५६	१०	२४	३८	५२	०७	२१	३५	४९	०३	१७	०२	घ.
०७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	०३	१०	१७	२४	३१	३८	२१	प.

भभोग. ५६॥५०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१४	२८	४२	५६	१०	२४	३८	५२	०६	२०	३४	४८	०२	१७	०२	घ
०४	०९	१३	१८	२२	२७	३२	३६	४१	४५	५०	५४	५९	०४	५६	प

चन्द्रगणित-प्रक्रिया·भाग २

भभोग ५६॥ से का एकादि पलम भयात के अनुसार व्यवहार करें।

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०७	१४	घ.
१४	२८	४२	५६	११	२२	३४	०८	१६	प.
१६	३४	५०	०८	२५	५१	२६	३२	००	वि.

भभोग ५६॥१०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०७	१४	घ.
१४	२८	४२	५६	११	२२	३३	०७	१४	प.
१४	२९	४३	५८	१४	२८	४२	२७	००	वि.

भभोग. ५६॥२०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०७	१४	घ.
१४	२८	४२	५६	११	२२	३३	०६	१२	प.
१२	२४	३६	४८	००	००	००	००	००	वि.

भभोग. ५६॥३०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०७	१४	घ.
१४	२८	४२	५६	१०	२१	३२	०४	०९	प.
०९	१८	२८	३६	४७	३५	२२	४४	००	वि

भभोग ५६॥४०

१	२	३	४	५	६	७	८	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०७	१४	घ.
१४	२८	४२	५६	१०	२१	३१	०३	०७	प.
०७	१४	२१	२८	३५	१०	४५	३०	००	वि.

भभोग. ५६॥५०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०७	१४	घ.
१४	२८	४२	५६	१०	२०	३१	०२	०४	प.
०४	०९	१३	१८	२२	४५	०७	१५	००	वि.

चन्द्र गणित प्रक्रिया भाग २

भभोग=५७।००से.५७।५०पर्यन्त का एकाद्विघटी फल-भयात के अनुसार व्यवहार करें।)

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं.
१४	२८	४२	५६	१०	२४	३८	५२	०६	२०	३४	४८	०२	१६	०३	घ.
०२	०४	०६	०८	१०	१२	१४	१६	१८	२१	२३	२५	२७	३०	३०	प.

भभोग=५७।१०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं.
१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	०५	१९	३३	४७	०१	१५	०४	घ.
५५	५२	५०	४९	४८	४७	४६	४६	५६	५६	५६	५६	५५	५६	०४	प

भभोग=५७।२०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	०५	१९	३३	४७	०१	१५	०४	घ.
५७	५३	५१	४८	४६	४३	४०	३७	३४	३२	२९	२६	२३	२१	२९	प.

भभोग=५७।३०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	०५	१९	३३	४६	००	१४	०५	घ.
५४	४९	४४	३९	३३	२८	२३	१८	१३	०७	०२	५७	५२	४७	१३	प.

भभोग=५७।४०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१३	२७	४१	५५	०८	२३	३७	५०	०४	१८	३२	४६	००	१४	०५	घ.
५२	४४	३७	२९	२२	१४	०७	५९	५१	४४	३६	२९	२१	१३	४७	प.

भभोग.५७।५०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
००	००	००	००	१	०१	१	०१	०१	०२	०३	२	२	०३	००	अं
१३	२६	४१	५५	०८	२२	३६	५०	०४	१८	३२	४५	४८	१३	०६	घ
४९	३९	२९	१९	०९	५९	४९	३९	२९	१९	०९	५९	४९	३८	२२	प

चन्द्र गणित प्रक्रिया भाग ३

भभोग=५७।००से.एकादि पल मान-भयात के अनुसार व्यवहार करें।

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०७	१४	घं.
१४	२८	४२	५६	१०	२०	३०	०१	०२	प.
०२	०४	०६	०८	१०	२१	३१	०२	००	वि.

भभोग=५७।१०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१३	घ.
१३	२७	४१	५५	०९	१९	२९	५९	५९	प.
५९	५९	५८	५८	५८	५६	५४	४८	००	वि.

भभोग=५७।२०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१३	घ.
१३	२७	४१	५५	०९	१९	२९	५८	५७	प.
५७	५४	५१	४८	४६	३२	१८	३६	००	वि

भभोग=५७।३०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०७	१३	घ.
१३	२७	४१	५५	०९	१९	२८	५७	५४	प.
५४	४९	४४	३९	३३	०७	४०	२०	००	वि

भभोग=५७।४०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१३	घ.
१३	२७	४१	५५	०९	१८	२८	५६	५२	प.
५२	४४	३७	२९	२२	४४	०६	१२	००	वि.

भभोग=५७।५०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	१	०२	०३	०६	१३	घ
१३	२६	४१	५५	०८	१६	२६	५४	४९	प.
४९	३९	२९	१९	०९	१९	२८	५६	००	वि

चन्द्र गणित प्रक्रिया. भाग २

भभोग = ५८।।०० से ५८।।५० पर्यन्त का एकाद्रि घटीफल (भयात के अनुसार) व्यवहार करें।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं
१३	२७	४१	५५	०८	२२	३६	५०	०४	१७	३१	४५	५९	१३	०६	घ.
४७	३४	२२	१०	५७	४४	३३	२०	०८	५५	४३	३१	१८	०६	५४	प.

भभोग = ५८।।१०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं.
१३	२७	४१	५५	०८	२२	३६	५०	०३	१७	३१	४५	५८	१२	०७	घ.
४३	३०	१५	००	४६	३१	१६	०१	४८	३२	१७	०२	४७	३३	२७	प.

भभोग = ५८।।२०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३५	
००	००	००	००	०१	०२	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं.
१३	२७	४१	५४	०८	२२	३६	४९	०३	१७	३०	४४	५८	१२	०८	घ.
४२	२५	०८	५१	३४	१७	००	४३	२६	०९	५१	३४	१७	००	००	प.

भभोग = ५८।।३०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं.
१३	२७	४१	५४	०८	०२	३५	४९	०३	१६	३०	४४	५७	११	०८	घ.
४०	२१	०१	४२	२२	०३	४३	२४	०४	४५	२५	०६	४६	२६	३३	प.

भभोग = ५८।।४०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	६०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं.
१३	२७	४०	५४	०८	२१	३५	४९	०२	१६	२९	४३	५७	१०	०९	घ.
३८	१६	५४	३२	१०	४८	२६	०४	४३	२१	५९	३८	१६	५४	०६	प.

भभोग = ५८।।५०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	२	०२	२	०२	०३	००	अं
१३	२७	४०	५४	०७	२१	३४	४८	०२	१५	२९	४३	५६	१०	०९	घ.
३४	११	४७	२३	५९	३४	१०	४६	२२	५८	३४	१०	४६	२१	३९	प

चन्द्र गणित प्रक्रिया. भाग ३

भभोग = ५८।०० से एकाद्री पलमान (भयात के अनुसार) व्यवहार करें।

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१३	घ.
१३	२७	४१	५५	०८	१७	२६	५३	४७	प.
४७	३५	२२	१०	५७	५५	५२	४४	००	विं

भभोग = ५८।।१०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१३	घ.
१३	२७	४१	५५	०८	१७	२६	५२	४५	प.
४५	३०	१५	००	४६	३२	१८	३६	००	वि.

भभोग = ५८।।२०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	३	१३	घ.
१३	२७	४१	५४	०८	१७	२५	५१	४२	प.
४२	२५	०८	५१	३४	०९	४३	२६	००	वि.

भभोग = ५८।।३०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१३	घ
१३	२७	४१	५४	०८	१६	२५	५०	४०	प.
४०	२१	०१	४२	२२	४५	०५	१०	००	वि

भभोग = ५८।।४०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१३	घ.
१३	२७	४०	५४	०८	१६	२४	४९	३८	प.
३८	१६	५४	३२	१०	२१	३१	०२	००	वि.

भभोग ५८।।५०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	६	१३	घ.
१३	२७	४०	५४	०७	१५	२३	४७	३४	प.
३४	११	४७	२३	५९	५८	५७	५४	००	वि.

चन्द्र गणित प्रक्रिया भाग-२

मभोग = ५८॥०० से. ५८॥५० पर्यन्त-का एकादि-घटी फल (भयात के अनुसार ... करें)

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं
१३	२६	४०	५४	०७	२१	३४	४८	०२	१५	२९	४२	५६	०९	१०	घ
३३	०६	४०	१४	४७	२१	५४	२८	०१	३५	०९	४२	१६	४९	११	प.

मभोग = ५८॥१०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१४	२७	४०	५४	०७	२१	३४	४८	०१	१५	२८	४२	५५	०९	१०	घ
२१	०२	३३	०५	३६	०७	३८	१०	४१	१२	४३	१५	४६	१८	४९	प

मभोग = ५८॥२०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	अं
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	घ.
१३	२६	४०	५३	०७	२०	३४	४७	०१	१४	२८	४१	५५	०८	११	घ.
[illegible]	२०	२८	५५	२४	५३	२२	५१	२०	४८	१८	४७	१६	४६	१४	प.

मभोग = ५८॥३०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं.
१३	२६	४०	५३	०६	२०	३४	४७	०१	१४	२७	४१	५४	०८	११	घ.
२६	५३	२०	४६	१३	४०	०७	३३	००	२७	५३	२०	४८	[illegible]	[illegible]	प

मभोग = ५८॥४०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०१	०२	०२	०३	००	अं
१३	२८	४०	५३	०७	२०	३३	४७	००	१४	२७	४०	५४	०७	१२	घ
२७	४८	१३	३०	०२	२६	५१	१५	४०	०४	२९	५३	१८	४२	०८	प

मभोग = ५८॥५०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०	०२	०२	०२	०३	००	अं.
१३	२६	४०	५३	०६	२०	३३	४६	००	१३	२६	४०	५३	[illegible]	१२	प
[illegible]	४४	०६	२८	५१	१३	३५	५७	१९	४२	०४	२६	४८	११	[illegible]	प.

चन्द्र गणित प्रक्रिया भाग-२

मभोग-५८॥०० से. ५८॥५० पर्यन्त का एकादि घटीफल (भयात के अनुसार ... करें)

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०२	०४	१३	घ.
१३	२०	४०	५४	००	५५	२२	४८	३३	प.
३३	४०	४०	१४	०७	३५	२२	४४	००	वि.

मभोग = ५८॥१०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०१	०३	०६	१३	घ.
१३	२७	४०	५४	०७	१५	२२	४५	३१	प.
३१	०२	३३	०५	३६	१२	४८	३६	००	वि.

मभोग = ५८॥२०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१३	घ.
१३	२६	४०	५३	०७	१४	२२	४४	२८	प.
२८	५६	२६	५५	२४	४९	१३	२६	००	वि

मभोग = ५८॥३०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१३	घ.
१३	२६	४०	५३	०६	१४	२१	४२	२६	प.
२६	५३	२०	४६	१३	२६	४०	२०	००	वि.

मभोग = ५८॥४०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१३	घ.
१३	२६	४०	५३	०७	१४	२१	४२	२७	प.
२७	४८	१३	३७	०२	०४	०६	१२	००	वि.

मभोग = ५८॥५०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१३	घ.
१३	२६	४०	५३	०६	१३	२०	४१	२२	प
२२	४४	०६	२८	५१	४२	३५	०६	००	वि.

चन्द्र गणित प्रक्रिया भाग २

भभोग=६०।००से६०।५० पर्यन्त क्रम एकादि घटी फल
(भयात के अनुसार व्यवहार करें।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०२	०३	अं.
१३	२६	४०	५३	०६	२०	३३	४६	००	१३	२६	४०	५३	०६	२०	घ.
२०	४०	००	२०	४०	००	२०	४०	००	२०	४०	००	२०	४०	००	प.

भभोग=६०।१०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं.
१३	२६	३९	५३	०६	१९	३३	४६	५९	१२	२६	३९	५२	०६	१९	००	घं.
१७	३५	५३	११	२८	४६	०४	२२	४०	५७	१५	३५	५३	१०	२८	२२	प.

भभोग=६०।२०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं.
१३	२६	३९	५३	०६	१९	३२	४६	५९	१२	२५	३८	५२	०५	१८	०१	प.
१५	३१	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०८	२४	३९	५४	०६	वि.

भभोग=६०।३०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं.
१३	२६	३९	५२	०६	१९	३२	४५	५९	१२	२५	३८	५१	०५	१८	०१	घ.
१३	२६	४०	५३	०७	२०	३३	४७	००	१४	२७	४१	५४	०८	२१	३४	प.

भभोग=६०।४०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	६०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं.
१३	२६	३९	५२	०५	१८	३२	४५	५८	११	२४	३८	५१	०४	१७	०२	घ.
११	२२	३३	४४	५६	०७	१८	२९	४०	५२	०३	१४	२५	३६	४८	११	प.

भभोग=६०।५०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	[illegible]	००	अं.
१३	२६	३९	५२	०५	१८	३२	४५	५८	११	२४	३७	५०	०४	१७	०२	घ.
०९	१८	२७	३६	४५	५४	०३	१२	२१	३०	३९	४८	५७	०६	१५	[illegible]	प.

७ चन्द्र गणित प्रक्रिया भाग ३

भभोग=६०से एकादि पल मूल
भयात के अनुसार व्यवहार करें

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१३	घ.
१३	२६	४०	५३	०६	१३	२०	४०	२०	स.
२०	४०	००	२०	४०	२०	००	००	००	वि.

भभोग=६०।१०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१३	घ.
१३	२६	३९	५३	०६	१२	१९	३८	१७	प.
१७	३५	५३	११	२८	५७	२८	५६	००	वि.

भभोग=६०।२०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१३	घ.
१३	२६	३९	५३	०६	१२	१८	३७	१५	प.
१५	३१	४७	०३	१८	३६	५४	४८	००	वि.

भभोग=६०।३०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१३	घ.
१३	२६	३९	५२	०६	१२	१८	३६	१३	प.
१३	२६	३९	५३	०७	१४	२१	४२	००	वि.

भभोग=६०।४०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१३	घ.
१३	२६	३९	५२	०५	११	१७	३५	११	प.
११	२२	३३	४६	५२	४४	४८	३६	००	वि.

भभोग=६०।५०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१३	घ.
१३	२६	३९	५२	०५	११	१७	३४	०९	प.
०९	१८	२७	३६	[illegible]	३०	१५	३०	००	वि.

चन्द्र गणित. प्रक्रिया. भाग. २

भभोग = ६१।।०० से ६१।।५० पर्यन्त का एकादि घटी फल = (भयात के अनुसार व्यवहार करें।)

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	०३	अं.
१३	२६	३९	५२	०५	१८	३१	४४	५८	११	२४	३७	५०	०३	१६	घ.
०६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	०१	०८	१५	२२	२९	३६	४३	प.

भभोग = ६१।।१०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०.	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१३	२६	३९	५२	०५	१८	३१	४४	५७	१०	२३	३६	५०	०३	१६	०३	घ
०४	०९	१४	१८	२३	२८	३३	३७	४२	४७	५२	५६	०१	०६	११	११	प

भभोग = ६१।।२०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	२०.	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१३	२६	३९	५२	०५	१८	३१	४४	५७	१०	२३	३६	४९	०२	१५	०४	घ
०२	०५	०७	१०	१३	१५	१८	२०	२३	२६	२८	३१	३३	३६	[illegible]	[illegible]	प

भभोग = ६१।।३०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	२२ ३०.	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१३	२६	३९	५२	०५	१८	३१	४४	५७	१०	२३	३६	४९	०२	१५	०४	घ
००	०१	०१	०२	०३	०३	०४	०५	०५	०६	०७	०७	०८	०९	०९	५२	प.

भभोग = ६१।।४०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१२	२५	३८	५१	०४	१७	३०	४३	५६	०९	२२	३५	४८	०१	१४	०५	घ
५८	५६	५५	५३	५१	५०	४८	४६	४५	४३	४२	४०	३८	[illegible]	३६	२७	प

भभोग = ६१।।५०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	२६ २०.	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१२	२५	३८	५१	०४	१७	३०	४३	५६	०९	२२	३५	४८	०१	१४	०५	घ.
५६	५३	४८	४५	४१	३७	३३	३०	२६	२२	१८	१५	११	[illegible]	०४	५५	प.

चन्द्र गणित. प्रक्रिया. भाग ३

भभोग = ६१।।०० मे. एकादि पल मान भयात के अनुसार व्यवहार करें।

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१३	घ.
१३	२६	३९	५२	०५	११	१६	३३	०६	प.
०६	१३	२०	२७	३४	०८	४३	२६	००	वि.

भभोग = ६१।।१०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१३	घ.
१३	२६	३९	५२	०५	१०	१६	३२	०४	प.
०४	०९	१४	१८	२३	४७	११	२२	००	वि.

भभोग = ६१।।२०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१३	घ.
१३	२६	३९	५२	०५	१०	१५	३१	०२	प.
०२	०५	०७	१०	१३	२६	३९	१८	००	वि.

भभोग = ६१।।३०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१३	घ.
१३	२६	३९	५२	०५	१०	१५	३०	००	प.
००	०१	०१	०२	०३	०६	०९	१८	००	वि.

भभोग = ६१।।४०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२५	३८	५१	०४	०९	१४	२९	५८	प.
५८	५६	५५	५३	५१	४३	३६	१२	००	वि.

भभोग = ६१।।५०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२५	३८	५१	०४	०९	१४	२८	५६	प
५६	५३	४८	४५	४१	२२	०४	०८	००	वि

चन्द्र गणित. प्रक्रिया. भाग.२

भभोग = ६२।।०० से ६२।।५० पर्यन्त का एकादि घटीफल (भपात के अनुसार) व्यवहार करें।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं.
१२	२५	३८	५१	०४	१७	३०	४३	५६	०९	२१	३४	[illegible]	००	१३	०६	घ.
[illegible]	४८	४२	३६	३०	२५	१९	१३	०७	०१	५६	[illegible]	[illegible]	३८	३३	२७	प.

भभोग = ६२।।१०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३२	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं.
१२	२५	३८	५१	०४	१७	३०	४२	५५	०८	२१	३४	४७	००	१३	०६	घ.
५२	४४	३६	२८	२०	१२	०४	५६	४९	४१	३३	२५	१७	०९	०१	५५	प.

भभोग = ६२।।२०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं.
१२	२५	३८	५१	०४	१६	२८	४२	५५	०८	२१	३४	४६	[illegible]	१२	०७	घ.
५०	५०	३०	२०	१०	००	५०	४०	३०	२०	१०	००	५०	४०	३१	२६	प.

भभोग = ६२।।३०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३६	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं.
१२	२५	३८	५१	०४	१६	२९	४२	५५	०८	२०	३३	४६	५९	१२	०८	घ.
४८	३६	२४	१२	००	४८	३६	२४	१२	००	४८	३६	२४	१२	००	००	प.

भभोग = ६२।।४०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	४०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं.
१२	२५	३८	५१	०३	१६	२८	४२	५४	०७	२०	३३	[illegible]	[illegible]	११	०८	घ.
४५	३१	१७	०३	४८	३५	२१	०७	५३	२८	२५	११	[illegible]	[illegible]	२४	३१	प.

भभोग = ६२।।५०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	४२	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं.
१२	२५	३८	५०	०३	१६	२९	४१	५४	०७	२०	३२	[illegible]	५८	१०	०८	घ.
४३	२७	११	५५	३९	२२	०७	५१	३५	१९	०२	४७	[illegible]	[illegible]	५८	०२	प.

चन्द्र गणित. प्रक्रिया भाग.३

भभोग = ६२ ने एकादि पलमान भपात के अनुसार व्यवहार करें।

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२५	३८	५१	०४	०९	१३	२७	५४	प.
५४	४८	४२	३६	३०	०१	३३	०६	००	वि.

भभोग = ६२।।१०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२५	३८	५१	०४	०८	१३	२६	५२	प.
५२	४४	३६	२८	२०	४१	०१	०२	००	वि.

भभोग = ६२।।२०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२५	३८	५१	०४	०८	१२	२५	५०	प.
५०	४०	३०	२०	१०	२०	३१	०२	००	वि.

भभोग = ६२।।३०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२५	३८	५१	०४	०८	१२	२४	४८	प.
४८	३६	२४	१२	००	००	००	००	००	वि.

भभोग = ६२।।४०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२५	३८	५१	०३	०७	११	२२	४५	प.
४५	३१	१७	०३	४८	३५	२५	५८	००	वि.

भभोग = ६३।।५०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२५	३८	५०	०३	०७	१०	२१	४३	प.
४३	२७	११	५५	३९	१९	५८	५६	००	वि.

चन्द्र गणित प्रक्रिया भाग-२

भयात ६३॥०० से ६३॥५० पर्यन्त का एकादो घटी कल भयातानुसार व्यवहार करें

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	५५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं.
०२	२५	३८	५०	०३	१६	२८	४१	५४	०६	१९	३२	४५	५७	१०	०९	घ.
४१	२३	०५	४७	२९	११	५३	३५	१७	५९	४०	२२	०४	४६	२८	२१	प.

भभोग ६३॥१०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं
१२	२५	३७	५०	०३	१५	२८	४१	५३	०६	१९	३१	४४	५७	०९	०८	घ
३९	१९	५८	३८	१८	५८	३८	१८	५७	३८	१८	५८	३८	१८	५८	०१	प

भभोग=६३॥२०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	५५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं
१२	२५	३७	५०	०३	१५	२८	४१	५३	०६	१८	३१	४४	५६	०९	१०	घ
३७	१५	५३	३१	०९	४७	२५	०३	४०	१८	५६	३४	१२	५०	२९	३१	प.

भभोग=-६३॥३०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं
१२	२५	३७	५०	०२	१५	२८	४०	५३	०५	१८	३१	४३	५६	०८	११	घ
३५	११	४७	२३	५९	३५	११	४७	२३	५९	३४	१०	४६	२२	५८	०१	प.

भभोग=-६३॥४०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	५५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं
१२	२५	३७	५०	०२	१५	२७	४०	५३	०५	१८	३०	४३	५५	०८	११	घ
३३	०७	४१	१५	४९	२३	५७	३१	०५	३९	१३	४७	२०	५४	२८	३१	प.

भभोग=-६३॥५०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं.
१२	२५	३७	५०	०२	१५	२७	४०	५२	०५	१७	३०	४२	५५	०७	१२	घ
३१	०३	३५	०७	३९	११	४३	१५	४७	१९	५१	२३	५५	२७	५९	०१	प

चन्द्र गणित प्रक्रिया भाग-२

भभोग ६३॥०० से एकादो चलमान भयातानुसार व्यवहार करें

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
०२	२५	३८	५०	०३	०६	१०	२०	४१	प.
४१	२३	०५	४७	२९	५९	२९	५८	००	वि.

भभोग-६३॥१०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२५	३७	५०	०३	०६	०९	१९	३९	प.
३९	१९	५८	३८	१८	३७	५६	५२	००	वि

भभोग=६३॥२०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२५	३७	५०	०३	०६	०९	१८	३७	प.
३७	१५	५३	३१	०९	१८	२८	५८	००	वि.

भभोग=६३॥३०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	अं.
२२	२५	३७	५०	०२	०५	०८	१७	३५	घ.
३५	११	४७	२३	५९	५९	५९	५८	००	वि

भभोग=-६३॥४०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२५	३७	५०	०२	०५	०८	१६	३३	प.
३३	०७	४१	१५	४९	३९	२९	५८	००	वि.

भभोग=-६४॥५०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२५	३७	५०	०२	०५	०७	१५	३१	प.
३१	०३	३५	०७	३९	१९	५८	५८	००	वि.

चन्द्र गणित प्रक्रिया भाग-२

भयात ६३।।००से ६३।।५० पर्यन्ति का एकादी घटी फल भयातानुसार व्यवहार करें

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं.
०२	२५	३८	५०	०३	१६	२८	४१	५४	०६	१९	३२	४५	५७	१०	०४	घ.
४१	२३	०५	४७	२९	११	५३	३५	१७	५९	४१	२२	०४	४६	२८	२१	प.

भभोग ६३।।१०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं
१२	२५	३७	५०	०३	१५	२८	४१	५३	०६	१९	३१	४४	५७	०९	०२	घ.
३८	१८	५८	३८	१८	५८	३८	१८	५७	३८	१८	५८	३८	१७	५७	०१	प

भभोग=६३।।२०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं
१२	२५	३७	५०	०३	१५	२८	४१	५३	०६	१८	३१	४४	५६	०९	१०	घ
३७	१५	५३	३१	०९	४७	२५	०३	४०	१८	५६	३४	१२	५०	२८	३१	प.

भभोग=-६३।।३०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं
१२	२५	३७	५०	०२	१५	२८	४०	५३	०५	१८	३१	४३	५६	०८	११	घ
३५	११	४७	२३	५९	३५	११	४७	२३	५९	३४	१०	४६	२२	५८	०१	प.

भभोग=-६३।।४०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं
१२	२५	३७	५०	०२	१५	२७	४०	५३	०५	१८	३०	४३	५५	०८	११	घ
३३	०७	४१	१५	४९	२३	५७	३१	०५	३९	१३	४७	२१	५४	२८	३१	प.

भभोग=-६३।।५०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं
१२	२५	३७	५०	०२	१५	२७	४०	५२	०५	१७	३०	४२	५५	०७	१२	घ
३१	०३	३५	०७	३९	११	४३	१५	४७	१९	५१	२३	५५	२७	५९	०१	प

चन्द्र गणित प्राक्रया भाग-२

भभोग ६३।।०० से एकादि चलमान भयातानुसार व्यवहार करें

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
०२	२५	३८	५०	०३	०६	१०	२०	४१	प.
४१	२३	०५	४७	२९	५५	२९	५८	००	वि.

भभोग-६३।।१०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२५	३७	५०	०३	०६	०९	१९	३८	प.
३८	१९	५८	३८	१९	३८	५७	५८	००	वि

भभोग=६३।।२०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२५	३७	५०	०३	०६	०९	१८	३७	प.
३७	१५	५३	३१	०९	१८	२८	५८	००	वि.

भभोग=६३।।३०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	अं.
१२	२५	३७	५०	०२	०५	०८	१७	३५	घ.
३५	११	४७	२३	५९	५९	५९	५८	००	वि

भभोग=-६३।।४०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२५	३७	५०	०२	०५	०८	१६	३३	प.
३३	०७	४१	१५	४९	३९	२९	५८	००	वि.

भभोग=-६४।।५०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२५	३७	५०	०२	०५	०७	१५	३१	प.
३१	०३	३५	०७	३९	१९	५८	५८	००	वि.

चन्द्र गपित. प्रक्रिया. भाग - २

भभोग:- ६४॥०० से ६४॥५० पर्यन्त. का एकादि. घटीफल.
(भपात के अनुसार व्यवहार करें।)

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६		
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	०३		अं
१२	२५	३७	५०	०२	१५	२७	४०	५२	०५	१७	३०	४२	५५	०७	२०		घ
३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००		प.

भभोग = ६४॥१०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१२	२४	३७	४९	०२	१४	२७	३९	५२	०४	१६	२९	४१	५४	०७	१९	००	घ
२८	५३	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	०८	३६	०४	३२	००	२८	३१	प

भभोग = ६४॥२०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१२	२४	३७	४९	०२	१४	२७	३९	५१	०४	१६	२९	४१	५२	०६	१८	०१	घ
२६	५३	१८	४४	१०	३६	०२	२८	५४	२०	४६	१३	३९	०५	३१	५७	०२	प.

भभोग = ६४॥३०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१२	२४	३६	४९	०२	१४	२६	३९	५१	०४	१६	२८	४१	५३	०६	१८	०१	घ
२४	४८	१२	३६	००	२५	४९	१३	३७	०१	२६	५०	१४	३८	०२	२७	३३	प.

भभोग = ६४॥४०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१२	२२	३६	४९	०१	१४	२६	३८	५१	०३	१६	२८	४०	५३	०५	१७	०२	घ
२२	४४	०६	२८	५१	१३	३५	५८	२०	४२	०४	२६	४९	११	३४	५६	०४	प

भभोग = ६४॥५०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१२	२४	३६	४९	०१	१४	२६	३८	५१	०३	१५	२८	४०	५२	०५	१७	०२	घ
२०	४०	०१	२१	४१	०२	२२	४२	०३	२३	४३	०४	२४	४५	०५	२६	३४	प

चन्द्र गणित प्रक्रिया भाग ३

भभोग:- ६४। से. एकादि पलमान
भपात के अनुसार व्यवहार करें

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२५	३७	५०	०२	०५	०७	१५	३०	प.
३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	००	वि.

भभोग = ६४॥१०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२४	३७	४९	०२	०४	०७	१४	२८	प.
२८	५३	२४	५२	२०	४०	००	००	००	वि.

भभोग = ६४॥२०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२४	३७	४९	०२	०४	०६	१३	२६	प.
२६	५२	१८	४४	१०	२०	३१	०२	००	वि.

भभोग = ६४॥३०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२४	३६	४९	०२	०४	०६	१२	२४	प.
२४	४८	१२	३६	००	०१	०२	०४	००	वि.

भभोग = ६४॥४०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२२	३६	४९	०१	०३	०५	११	२२	प.
२२	४४	०६	२८	५१	४२	३४	०८	००	वि.

भभोग = ६४॥५०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२४	२६	४८	०१	०३	०५	१०	२०	प.
२०	४०	०१	२१	४१	२३	०५	१०	००	वि.

चन्द्र गणित.प्रक्रिया.भाग.२

भभोग=-६५।।०० से ६५।।५० पर्यन्त का एकादि घटी फल (भयात के अनुसार) व्यवहार करें।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१९	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१२	२४	३६	४८	०१	१३	२६	३८	५०	०३	१५	२८	३८	५२	०४	१६	०३	घ
१८	३६	५५	१३	३२	५०	०९	२७	४६	०४	२२	४१	५८	१८	३६	५५	०२	प

भभोग=-६५।।१०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७ ३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१२	२४	३६	४८	०१	१३	२५	३८	५०	०२	१५	२७	३८	५१	०४	१६	०३	घ
१६	३३	४९	०६	२२	३९	५५	१२	२९	४५	०२	१८	३५	५२	०८	२५	३३	प

भभोग=-६५।।२०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	२०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१२	२४	३६	४८	०१	१३	२५	३७	५०	०२	१४	२६	३८	५१	०३	१५	०४	घ
१४	२२	४४	५८	१३	२८	४२	५७	१२	२६	४१	५६	१०	२५	४०	५५	०५	प

भभोग=-६५।।३०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	२२ ३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१२	२४	३६	४८	०१	१३	२५	३७	४९	०२	१४	२६	३९	५०	०३	१५	०४	घ
१२	२५	३८	५१	०४	१६	२९	४२	५५	०८	२०	३३	४३	५९	१२	२५	३५	प

भभोग=-६५।।४०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	२५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१२	२४	३६	४८	००	१३	२५	३७	४९	०१	१३	२६	३८	५०	०२	१४	०५	घ
१०	२१	३२	४३	५४	०५	१६	२६	३७	४८	५९	१०	२२	३२	४३	५४	०५	प

भभोग=-६५।।५०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	३२ ३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१२	२४	३६	४८	००	१२	२५	३७	४९	०१	१३	२५	३८	५०	०२	१४	०५	घ
०४	१८	२७	३६	४५	५४	०३	१२	२१	३१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२६	३४	प

चन्द्र गणित प्रक्रिया भाग ३

भभोग=-६५।। से एकादि पल मान भयात. के अनुसार व्यवहार करें।

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२४	३६	४८	०१	०३	०४	०८	१८	प.
१८	३६	४४	१३	३२	०४	३६	१२	००	वि

भभोग=-६५।।१०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ
१२	२४	३६	४८	०१	०२	०४	०८	१६	प.
१६	३३	४९	०६	२२	४५	०८	१६	००	वि

भभोग=-६५।।२०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ
१२	२४	३६	४८	०१	०२	०३	०७	१४	प.
१४	२८	४४	५८	१३	२६	४०	२०	००	वि

भभोग=-६५।।३०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ
१२	२४	३६	४८	०१	०२	०३	०६	१२	प.
१२	२५	३८	५१	०४	०८	१२	२५	००	वि

भभोग=-६५।।४०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०१	०३	०६	[illegible]	घ
१२	२४	३६	४८	०४	०९	०२	०५	११	प.
१०	२१	३२	४३	५४	४८	४३	२६	००	वि

भभोग=-६५।।५०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ
१२	२४	३६	४८	००	०१	०२	०४	०८	प
०८	१८	[illegible]	३६	[illegible]	[illegible]	१६	३४	००	वि

चन्द्र गणित.प्रक्रिया.भाग.२

भभोग=-६५।।००से.६५।।५०पर्यन्त का एकाद्रिघटी फल (भयात के अनुसार) व्यवहार करे।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१२	२४	३६	४८	०१	१३	२६	३८	५०	०३	१५	२६	३८	५२	०४	१६	०३	घ
१८	३६	५५	१३	३२	५०	०९	२७	४६	०४	२२	४१	५८	१८	३६	५५	०२	प

भभोग=-६५।।१०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१६/३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१२	२४	३६	४८	०१	१३	२५	३८	५०	०२	१५	२७	३९	५१	०४	१६	०३	घ
१९	३३	४८	०६	२२	३९	५५	१३	२९	४५	०२	१९	३५	५१	०८	२५	३२	प

भभोग=-६५।।२०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	२०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१२	२४	३६	४८	०१	१३	२५	३७	५०	०२	१४	२६	३८	५१	०३	१५	०४	घ
१४	२२	४४	५८	१३	२८	४२	५७	१२	२६	४१	५६	१०	२५	४०	५५	०५	प

भभोग=-६५।।३०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	२२/३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१२	२४	३६	४८	०१	१३	२५	३७	४९	०२	१४	२६	३८	५०	०३	१५	०४	घ
१२	२५	३८	५१	०४	१६	२९	४२	५५	०८	२०	३३	४६	५९	१२	२५	३५	प

भभोग=-६५।।४०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	२५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१२	२४	३६	४८	००	१३	२५	३७	४९	०१	१३	२६	३८	५०	०२	१४	०५	घ
१०	२१	३२	४३	५४	०५	१६	२६	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४३	५५	०५	प

भभोग=-६५।।५०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	२५/३	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१२	२४	३६	४८	००	१२	२५	३७	४९	०१	१३	२५	३८	५०	०२	१४	०५	घ
०५	१८	२७	३६	४५	५४	०३	१२	२१	३१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८	२६	३४	प

१२

चन्द्र गणित प्रक्रिया भाग ३

भभोग=६५।।मे एकादि पल मान भयात. के अनुसार व्यवहार करें।

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२४	३६	४८	०१	०३	०४	४८	१८	प.
१८	३६	४८	१३	३२	०४	३६	१२	००	वि

भभोग=-६५।।१०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२४	३६	४८	०१	०२	०४	०८	१६	प.
१६	३३	४८	०६	२२	४५	०८	१६	००	वि.

भभोग=-६५।।२०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२४	३६	४८	०१	०२	०३	०७	१४	प.
१४	२८	४४	५८	१३	२६	४०	२०	००	वि

भभोग=-६५।।३०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ
१२	२४	३६	४८	०१	०२	०३	०६	१२	प.
१२	२५	३८	५१	०४	०८	१२	२४	००	वि

भभोग=-६५।।४०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०१	०३	०६	[illegible]	घ.
१२	२४	३६	४८	०४	०१	०२	०५	११	प.
१०	२१	३२	४३	५४	४८	४३	२६	००	वि

भभोग=-६५।।५०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ
१२	२४	३६	४८	००	०१	०२	०४	०८	प
०८	१८	२६	३६	[illegible]	[illegible]	१६	३३	००	वि

चन्द्र गणित प्रक्रिया · भाग - २

भभोग ६६।।० से ६७।।०० पर्यन्त एकादी घटीफल
(भयात के अनुसार व्यवहार करें)

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१२	२४	३६	४८	००	१२	२४	३६	४९	०१	१३	२५	३७	४९	०१	१३	०६	घ.
०७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	०५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	०४	पं.

भभोग = ६६।।१०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	३५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१२	२४	३६	४८	००	१२	२४	३६	४८	००	१२	२५	३७	४९	०१	१३	०६	घ.
०५	१०	१६	२१	२७	३२	३८	४३	४८	५४	५९	०५	१०	१६	२१	२७	३३	प.

भभोग = ६६।।२०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	३५	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१२	२४	३६	४८	००	१२	२४	३६	४८	००	१२	२४	३६	४८	००	१२	०७	घ.
०३	०७	१०	१४	१८	२१	२५	२८	३२	३६	३९	४३	४६	५०	५४	५८	०२	प.

भभोग · ६६।।३०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१२	२४	३६	४८	००	१२	२४	३६	४८	००	१२	२४	३६	४८	००	१२	०७	घ
०१	०३	०५	०७	०८	१०	१२	१४	१६	१७	१९	२१	२३	२४	२६	२८	३१	प.

भभोग · ६६।।४०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	३०	
००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	०३	००	अं
१२	२४	३६	४८	००	१२	२४	३६	४८	००	१२	२४	३६	४८	००	१२	०८	घ.
००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	प.

भभोग · ६६।।५०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	३०	
००	००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं
११	२३	३५	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	११	२३	३४	४६	५८	११	१८	घ
५८	५६	५४	५२	५१	४९	४७	४५	४३	४२	४०	३८	३६	३४	३३	३२	३८	प.

भभोग · ६७।।००

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	३०	
००	००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०३	००	अं
११	२३	३५	४७	५८	११	२३	३४	४६	५८	११	२३	३४	४६	५८	११	०९	घ
५६	५२	४९	४५	४२	३८	३४	३१	२७	२३	२०	१६	१३	०९	०५	०३	५९	प

चन्द्र गणित प्रक्रिया भाग 3

१३ भभोग = ६६·६७ से एकादी घटीफल मान भयात अनुसार व्यवहार करें,

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ
१२	२४	३६	४८	००	०१	०१	०३	०७	प.
०७	१४	२१	२९	३६	१२	४९	३८	००	वि

भभोग = ६६।।१०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ०
१२	२४	३६	४८	००	००	०१	०२	०५	प०
०५	१०	१६	२१	२७	५४	२१	४२	००	वि·

भभोग = ६६।।२०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२४	३६	४८	००	००	००	०१	०३	प.
०३	०७	१०	१४	१८	३६	५४	४८	००	वि.

भभोग · ६६।।३०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	०१	०२	०३	०६	१२	घ.
१२	२४	३६	४८	००	००	००	००	०१	प.
०१	०३	०५	०७	०८	१७	२६	५२	००	वि.

भभोग · ६६।।४०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	००	०१	०२	०५	११	घ.
१२	२४	३६	४८	००	००	००	००	००	प
००	००	००	००	००	००	००	००	०४	वि

भभोग - ६६।।५०

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	००	०१	०२	०५	११	घ
११	२३	३५	४७	५९	५९	५९	५९	५८	प
५८	५६	५४	५२	५१	४२	३३	०६	००	वि

भभोग - ६७।।००

१	२	३	४	५	१०	१५	३०	६०	
००	००	००	००	००	०१	०२	०५	११	घ
११	२३	३५	४७	५८	५८	५८	५८	५८	प
५६	५२	४९	४५	४२	२३	०५	१०	००	वि

चन्द्र गणित.प्रक्रिया.भाग.४

भभोग.५५.से.६७ पर्यन्त.मे.एकादि.वर्धित.पालान्तरखण्ड,

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३		
००/१२	००/१२	००/४८	०१/००	०१/१८	०१/३६	०१/५४	०२/०६	०२/२४	०२/४२	०२/५४	०३/०६	०३/३०	XX	१
००/२४	०१/००	०१/३६	०२/००	०२/२८	०३/१२	०३/४८	०३/४८	०४/४८	०५/२४	०५/४८	०६/१२	०७/००	XX	२
००/३६	०१/२०	०२/२४	०३/००	०३/५२	०४/४८	०५/४२	०६/१८	०७/१२	०८/०६	०८/४२	०९/१८	१०/३०	XX	३
००/४८	०२/००	०३/१२	०४/००	०५/१२	०६/२४	०७/३६	०८/२४	०९/३६	१०/४८	११/३६	१२/२४	१४/००	XX	४
०१/००	०२/३०	०४/००	०५/००	०६/३०	०८/००	०९/३०	१०/३०	१२/००	१३/३०	१४/३०	१५/३०	१६/३०	XX	५
०१/१२	०३/००	०४/४८	०६/००	०७/४८	०९/३६	११/२४	१२/३६	१४/२४	१६/१२	१७/२४	१८/३६	२१/००	XX	६
०१/२४	०३/३०	०५/३६	०७/००	०९/०६	११/१२	१३/१८	१४/४२	१६/४८	१८/५४	२०/१८	२१/४२	२४/३०	XX	७
०१/३६	०४/००	०६/२४	०८/००	१०/२४	१२/४८	१५/१२	१६/४८	१९/१२	२१/३६	२३/१२	२४/४८	२८/०६	XX	८
०१/४८	०४/३०	०७/१२	०९/००	११/४२	१४/२४	१८/४६	१८/५४	२१/३६	२४/१८	२६/०६	२७/५४	३१/३०	XX	९

भभोग = ५६

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	
००/१८	००/३०	००/४८	०१/००	०१/१२	०१/२४	०१/४२	०२/००	०२/१२	०२/२४	०२/४२	०२/५४	०३/१८	०३/३०	१
००/३६	०१/००	०१/३६	०२/००	०२/२४	०२/४८	०३/२४	०४/००	०४/२४	०४/४८	०५/२४	०५/४८	०६/३६	०७/००	२
००/५०	०१/३०	०२/२४	०३/००	०३/३६	०४/१२	०५/०६	०६/००	०६/३६	०७/१२	०८/०६	०८/४२	०९/५४	१०/३०	३
०१/१२	०२/००	०३/१२	०४/००	०४/४८	०५/३६	०६/४८	०८/००	०८/४८	०९/३६	१०/४८	११/३६	१३/१२	१४/००	४
०१/३०	०२/३०	०४/००	०५/००	०६/००	०७/००	०८/३०	१०/००	११/००	१२/००	१३/३०	१४/२०	१६/३०	१७/२०	५
०१/४८	०३/००	०४/४८	०६/००	०७/१२	०८/२४	१०/१२	१२/००	१२/००	१४/२४	१६/१२	१७/२४	१८/४८	२१/००	६
०२/०६	०३/३०	०५/३६	०७/००	०८/२४	०९/४८	११/५४	१४/००	१४/००	१६/४८	१८/५४	२०/१८	२३/०६	२४/३०	७
०३/३६	०४/००	०६/२४	०८/००	०९/३६	११/१२	१३/३६	१६/००	१६/००	१७/१२	२१/३६	२३/१२	२६/२४	२८/००	८
०३/४२	०४/३०	०७/१२	०९/००	११/४८	१३/३६	१५/४८	१८/००	१८/००	२१/३६	२४/२४	२६/०६	२८/३२	३१/३०	९

सभोग = ५७

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	~~१~~
००/१८	००/३०	००/४८	०१/००	०१/१२	०१/२४	०१/४२	०१/५४	०२/०६	०२/३०	०२/४२	०२/५४	०३/१२	०३/२४	२
००/३६	०१/००	०१/३६	०२/००	०२/२४	०२/४८	०३/२४	०३/४८	०४/१२	०५/००	०५/२४	०५/४८	०६/२४	०६/४८	३
००/५४	०१/३०	०२/२४	०३/००	०३/३६	०४/१२	०४/१२	०५/४२	०६/१८	०७/३०	०८/०६	०८/४२	०९/३६	१०/१२	४
०१/१२	०२/००	०३/१२	०४/००	०४/४८	०५/३६	०५/३६	०७/३६	०८/२४	१०/००	१०/४८	११/३६	१२/४८	१३/३६	५
०१/३०	०२/३०	०४/००	०५/००	०६/००	०७/००	०७/००	०९/३०	१०/३०	१२/३०	१३/३०	१४/३०	१६/००	१७/००	६
०१/४८	०३/००	०४/४८	०६/००	०७/१२	०८/२४	०८/२४	११/२४	१२/३६	१५/००	१६/१२	१७/२४	१९/१२	२०/२४	७
०२/०६	०३/३०	०५/३६	०७/००	०८/२४	०९/४८	०९/४८	१३/१२	१४/४२	१७/३०	१८/५४	२०/१८	२२/२४	२३/४८	८
०२/२४	०४/००	०६/२४	०८/००	०९/३६	११/१२	११/१२	१५/१२	१६/४८	२०/००	२१/३६	२३/१२	२५/३६	२६/१२	९
०२/४२	०४/३०	०७/१२	०९/००	१०/४८	१२/३६	१२/३६	१८/३६	१८/५४	२२/३०	२४/१८	२६/०६	२८/४८	३०/३६	

१

९

विवरण.

ऊपर.भागमे-भयात घटियां तथा दाहिने भभोग की वर्धित पलेहैं।

इन दोनों का संपात कोष्टक फल ही चद्रण संज्ञक समझें।

यहां अशुद्ध हो? छपी हुई है

चन्द्र गणित प्रक्रिया भाग ४

अमोग = ५८

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४		
००/१२	००/३०	००/४२	०१/००	०१/०६	०१/२४	०१/४२	०१/५४	०२/०६	०२/१८	०२/३६	०२/४८	०३/००	०३/१८	XX	१
००/२४	०१/००	०१/२४	०३/००	०२/१२	०२/४८	०३/२४	०३/४८	०४/१२	०४/३६	०५/१२	०५/३६	०६/००	०६/३६	XX	२
००/३६	०१/३०	०२/३०	०३/००	०३/१८	०४/१२	०५/०६	०५/४२	०६/१८	०६/५४	०७/४८	०८/२४	०९/००	०९/५४	XX	३
००/४८	०२/००	०२/४८	०४/००	०४/२४	०५/३६	०६/४८	०७/३६	०८/२४	०९/१२	१०/२४	११/१२	१२/००	१३/१२	XX	४
०१/००	०२/३०	०३/००	०५/००	०५/३०	०७/००	०८/३०	०९/३०	१०/३०	११/३०	१३/००	१४/००	१५/००	१६/३०	XX	५
०१/१२	०३/००	०३/१२	०६/००	०६/३६	०८/२४	१०/१२	११/२४	१२/३६	१३/४८	१५/३६	१६/४८	१८/००	१९/४८	XX	६
०१/२४	०३/३०	०४/५४	०७/००	०७/४२	०९/४८	११/५४	१३/१८	१४/४२	१६/०६	१८/१२	१९/३६	२१/००	२३/३०	XX	७
०१/३६	०४/००	०५/३६	०८/००	०८/४८	११/१२	१३/३६	१५/१२	१६/४८	१८/२४	२०/४८	२२/२४	२४/००	२६/२४	XX	८
०१/४८	०४/३०	०६/१८	०९/००	०९/५४	१२/३६	१५/१८	१७/०६	१८/५४	२०/४२	२३/२४	२५/१२	२७/००	२९/४२	XX	९

अमोग = ५९

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४		
००/१२	००/३०	००/४२	००/५४	०१/०६	०१/२४	०१/३६	०१/४८	०२/००	०२/१८	०२/३०	०२/४२	०३/००	०३/०६	XX	१
००/२४	०१/००	०१/२४	०१/४८	०२/१२	०२/४८	०३/१२	०३/३६	०४/[illegible]	०४/३६	०५/००	०५/२४	०६/००	०६/१२	XX	२
००/३६	०१/३०	०२/०६	०२/४२	०३/१८	०४/१२	०४/४८	०५/२४	०६/००	०६/५४	०७/३०	०८/०६	०९/००	०९/१८	XX	३
००/४८	०२/००	०२/४८	०३/३६	०४/२४	०५/३६	०६/२४	०७/१२	०८/००	०९/१२	१०/००	१०/४८	१२/००	१३/२४	XX	४
०१/००	०२/३०	०३/००	०४/३०	०५/३०	०७/००	०८/००	०९/००	१०/००	११/३०	१२/३०	१३/३०	१५/००	१५/३०	XX	५
०१/१२	०३/००	०४/१२	०५/२४	०६/३६	०८/२४	०९/३६	१०/४८	१२/००	१३/४८	१५/००	१६/१२	१८/००	१८/३६	XX	६
०१/२४	०३/३०	०४/५४	०६/१८	०७/४२	०९/४८	११/१२	१२/३६	१४/००	१६/३०	१७/३०	१८/५४	२१/००	२१/४२	XX	७
०१/३६	०४/००	०५/३६	०७/१२	०८/४८	११/१२	१२/४८	१४/२४	१६/००	१८/२४	२०/००	२१/३६	२४/००	२४/४८	XX	८
०१/४८	०४/३०	०६/१८	०८/०६	०९/५४	१२/३६	१४/२४	१६/१२	१८/००	२१/४२	२२/३०	२४/१८	२७/००	२७/५४	XX	९

अमोग = ६०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
००/१२	००/३०	००/४२	००/५४	०१/०६	०१/१८	०१/३६	०१/४८	०२/०४	०२/१२	०२/२४	०२/३६	०२/४२	०३/००	०३/१२	१
००/२४	०१/००	०१/२४	०१/४८	०२/१२	०२/३६	०३/१२	०३/३६	०६/००	०४/२४	०४/४८	०५/१२	०५/२४	०६/००	०६/२४	२
००/३६	०१/३०	०२/०६	०२/४२	०३/१८	०३/५४	०४/४८	०५/२४	०८/००	०६/३६	०७/१२	०७/४८	०८/०६	०९/००	०९/३६	३
००/४८	०२/००	०२/४८	०३/३६	०४/२४	०५/१२	०६/२४	०७/१२	१०/००	०८/४८	०९/३६	१०/२४	१०/४८	१२/००	१२/४८	४
०१/००	०२/३०	०३/००	०४/३०	०५/३०	०६/३०	०८/००	०९/००	१२/००	११/००	१३/००	१३/००	१३/३०	१५/००	१६/००	५
०१/१२	०३/००	०४/१२	०५/२४	०६/३६	०७/४८	०९/३६	१०/४८	१४/००	१३/३६	१४/२४	१५/३६	१६/१२	१८/००	१९/१२	६
०१/२४	०३/३०	०४/५४	०६/१२	०७/४२	०९/०६	[illegible]	[illegible]	१६/००	१५/२४	१६/४८	१८/१२	१८/५४	२१/००	२२/२४	७
०१/३६	०४/००	०५/३६	०७/१२	०८/४८	१०/२४	१२/४८	१४/२४	१८/००	१७/३६	१९/१२	२०/४८	२१/३६	२४/००	२५/३६	८
०१/४८	०४/३०	०६/१८	[illegible]	०९/५४	११/४२	१४/२४	१६/१२	२०/००	१९/४८	२१/३६	२३/२४	२४/१८	२७/००	२८/४८	९

चन्द्र गणित प्रक्रिया - भाग - ४

भभोग - ६१

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
००/१२	००/२४	००/३६	००/४८	०१/००	०१/१८	०१/३०	०१/४८	०१/५४	०२/०६	०२/२४	०२/३६	०२/४८	०३/००	०३/१२	१
००/२४	००/४८	०१/१२	०१/३६	०२/००	०२/३६	०३/००	०३/३६	०३/४८	०४/१२	०४/४८	०५/१२	०५/३६	०६/००	०६/२४	२
००/३६	०१/१२	०१/४८	०२/२४	०३/००	०३/५४	०४/३०	०५/२४	०५/४२	०६/१८	०६/१२	०७/४८	०८/२४	०९/००	०९/३६	३
००/४८	०१/३६	०२/२४	०३/१२	०४/००	०५/१२	०६/००	०७/१२	०७/३६	०८/२४	०९/३६	१०/२४	११/१२	१२/००	१२/४८	४
०१/००	०२/००	०३/००	०४/००	०५/००	०६/३०	०७/३०	०९/००	०९/३०	१०/३०	१२/००	१३/००	१४/००	१५/००	१६/००	५
०१/१२	०२/२४	०३/३६	०४/४८	०६/००	०७/४८	०९/००	१०/४८	११/२४	१२/३६	१४/२४	१५/३६	१६/४८	१८/००	१९/१२	६
०१/२४	०२/४८	०४/१२	०५/३६	०७/००	०९/०६	१०/३०	१२/३६	१३/१८	१४/४२	१६/४८	१८/१२	१९/३६	२१/००	२२/२४	७
०१/३६	०३/१२	०४/४८	०६/२४	०८/००	१०/२४	१२/००	१४/२४	१५/१२	१६/४८	१९/१२	२०/४८	२२/२४	२४/००	२५/३६	८
०१/४८	०३/३६	०५/२४	०७/१२	०९/००	११/४२	१३/३०	१६/१२	१७/०६	१८/५४	२१/३६	२३/२४	२५/१२	२७/००	२८/४८	९

भभोग - ६२

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
००/१२	००/२४	००/३६	००/४८	०१/००	०१/१२	०१/३०	०१/४२	०१/४८	०२/००	०२/१८	०२/३०	०२/४२	०२/५४	०३/०६	१
००/२४	००/४८	०१/१२	०१/३६	०२/००	०२/२४	०३/००	०३/२४	०३/३६	०४/००	०४/३६	०५/००	०५/२४	०५/४८	०६/१२	२
००/३६	०१/१२	०१/४८	०२/२४	०३/००	०३/३६	०४/३०	०५/०६	०५/२४	०६/००	०६/५४	०७/३०	०८/०६	०८/४२	०९/१८	३
००/४८	०१/३६	०२/२४	०३/१२	०४/००	०४/४८	०६/००	०६/४८	०७/१२	०८/००	०९/१२	१०/००	१०/४८	११/३६	१२/२४	४
०१/००	०२/००	०३/००	०४/००	०५/००	०६/००	०७/३०	०८/३०	०९/००	१०/००	११/३०	१२/३०	१३/३०	१४/३०	१५/३०	५
०१/१२	०२/२४	०३/३६	०४/४८	०६/००	०७/१२	०९/००	१०/१२	१०/४८	१२/००	१३/४८	१५/००	१६/१२	१७/२४	१८/३६	६
०१/२४	०२/४८	०४/१२	०५/३६	०७/००	०८/२४	१०/३०	११/५४	१२/३६	१४/००	१६/०६	१७/३०	१८/५४	२०/१८	२१/४२	७
०१/३६	०३/१२	०४/४८	०६/२४	०८/००	०९/३६	१२/००	१३/३६	१४/२४	१६/००	१८/२४	२०/००	२१/३६	२३/१२	२४/४८	८
०१/४८	०३/३६	०५/२४	०७/१२	०९/००	१०/४८	१३/३०	१५/१८	१६/१२	१८/००	२०/४२	२२/३०	२४/१८	२६/०६	२७/५४	९

भभाग - ६३

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
००/१२	००/२४	००/३६	००/४८	०१/००	०१/२४	०१/१२	०१/३६	०१/४८	०२/००	०२/१२	०२/२४	०२/३६	०२/४८	०३/००	१
००/२४	००/४८	०१/१२	०१/३६	०२/००	०२/२४	०२/४८	०३/१२	०३/३६	०४/००	०४/२४	०४/४८	०५/१२	०५/३६	०६/००	२
००/३६	०१/१२	०१/४८	०२/२४	०३/००	०३/३६	०४/१२	०४/४८	०५/२४	०६/००	०६/३६	०७/१२	०७/४८	०८/२४	०९/००	३
००/४८	०१/३६	०२/२४	०३/१२	०४/००	०४/४८	०५/३६	०६/२४	०७/१२	०८/००	०८/४८	०९/३६	१०/२४	११/१२	१२/००	४
०१/००	०२/००	०३/००	०४/००	०५/००	०६/००	०७/१२	०८/२४	०९/३०	१०/००	११/००	१२/००	१३/००	१४/००	१५/००	५
०१/१२	०२/२४	०३/३६	०४/४८	०६/००	०७/१२	०८/२४	०९/३६	१०/४८	१२/००	१३/१२	१४/२४	१५/३६	१६/४८	१८/००	६
०१/२४	०२/४८	०४/१२	०५/३६	०७/००	०८/२४	०९/४८	११/१२	१२/३६	१४/००	१५/२४	१६/४८	१८/१२	१९/३६	२१/००	७
०१/३६	०३/१२	०४/४८	०६/२४	०८/००	०९/३६	११/१२	१२/४८	१४/२४	१६/००	१७/३६	१९/१२	२०/४८	२२/२४	२४/००	८
०१/४८	०३/३६	०५/२४	०७/१२	०९/००	१०/४८	१२/३६	१४/२४	१६/१२	१८/००	१९/४८	२१/३६	२३/२४	२५/१२	२७/००	९

चन्द्र गणित प्रक्रिया भाग-४

भभोग-६४

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	
०० १२	०० २४	०० ३६	०० ४८	०१ ००	०१ १२	०१ २४	०१ ३६	०१ ४८	०२ ००	०२ १२	०२ २४	०२ ३०	०२ ४२	०२ ४८	०३ ००	१
०० २४	०० ४८	०१ १२	०१ ३६	०२ ००	०२ २४	०२ ४८	०३ १२	०३ ३६	०४ ००	०४ २४	०४ ४८	०५ ००	०५ २४	०५ ३६	०६ ००	२
०० ३६	०१ १२	०१ ४८	०२ २४	०३ ००	०३ ३६	०४ १२	०४ ४८	०५ २४	०६ ००	०६ ३६	०७ १२	०७ ३०	०८ ०६	०८ २४	०९ ००	३
०० ४८	०१ ३६	०२ २४	०३ १२	०४ ००	०४ ४८	०५ ३६	०६ २४	०७ १२	०८ ००	०८ ४८	०९ ३६	१० ००	१० ४८	११ १२	१२ ००	४
०१ ००	०२ ००	०३ ००	०४ ००	०५ ००	०६ ००	०७ ००	०८ ००	०९ ००	१० ००	११ ००	१२ ००	१२ ३०	१३ ३०	१४ ००	१५ ००	५
०१ १२	०२ २४	०३ ३६	०४ ४८	०६ ००	०७ १२	०८ २४	०९ ३६	१० ४८	१२ ००	१३ १२	१४ २४	१५ ००	१६ १२	१६ ४८	१८ ००	६
०१ २४	०२ ४८	०४ १२	०५ ३६	०७ ००	०८ २४	०९ ४८	११ १२	१२ ३६	१४ ००	१५ २४	१६ ४८	१७ ३०	१८ ५४	१९ ३६	२१ ००	७
०१ ३६	०३ १२	०४ ४८	०६ २४	०८ ००	०९ ३६	११ १२	१२ ४८	१४ २४	१६ ००	१७ ३६	१९ १२	२० ००	२१ ३६	२२ २४	२४ ००	८
०१ ४८	०३ ३६	०५ २४	०७ १२	०९ ००	१० ४८	१२ ३६	१४ २४	१६ १२	१८ ००	१९ ४८	२१ ३६	२२ ३०	२४ १८	२५ १२	२७ ००	९

भभोग-६५

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	
०० १२	०० २४	०० ३६	०० ४२	०१ ००	०१ ०६	०१ १८	०१ ३०	०१ ४२	०१ ५४	०२ ००	०२ १८	०२ ३०	०२ ३६	०२ ४८	०३ ००	१
०० २४	०० ४८	०१ १२	०१ २४	०२ ००	०२ १२	०२ ३६	०३ ००	०३ २४	०३ ४८	०४ ००	०४ ३६	०५ ००	०५ १२	०५ ३६	०६ ००	२
०० ३६	०१ १२	०१ ४८	०२ ०६	०३ ००	०३ १८	०३ ५४	०४ ३०	०५ ०६	०५ ४२	०६ ००	०६ ५४	०७ ३०	०७ ४८	०८ २४	०९ ००	३
०० ४८	०१ ३६	०२ २४	०२ ४८	०४ ००	०४ २४	०५ १२	०६ ००	०६ ४८	०७ ३६	०८ ००	०९ १२	१० ००	१० २४	११ १२	१२ ००	४
०१ ००	०२ ००	०३ ००	०३ ३०	०५ ००	०५ ३०	०६ ३०	०७ ३०	०८ ३०	०९ ३०	१० ००	११ ३०	१२ ३०	१३ ००	१४ ००	१५ ००	५
०१ १२	०२ २४	०३ ३६	०४ १२	०६ ००	०६ ३६	०७ ४८	०९ ००	१० १२	११ २४	१२ ००	१३ ४८	१५ ००	१५ ३६	१६ ४८	१८ ००	६
०१ २४	०२ ४८	०४ १२	०४ ५४	०७ ००	०७ ४२	०९ ०६	१० ३०	११ ५४	१३ १८	१४ ००	१६ ०६	१७ ३०	१८ १२	१९ ३६	२१ ००	७
०१ ३६	०३ १२	०४ ४८	०५ ३६	०८ ००	०८ ४८	१० २४	१२ ००	१३ ३६	१५ १२	१६ ००	१८ २४	२० ००	२० ४८	२२ २४	२४ ००	८
०१ ४८	०३ ३६	०५ २४	०६ १८	०९ ००	०९ ५४	११ ४२	१३ ३०	१५ १८	१७ ०६	१८ ००	२० ४२	२२ ३०	२३ २४	२५ १२	२७ ००	९

भभोग-६६

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	
०० १२	०० २४	०० ३०	०० ४२	०० ५४	०१ ०६	०१ १८	०१ २४	०१ ३६	०१ ४८	०२ ००	०२ १२	०२ २४	०२ ३०	०२ ४२	०२ ५४	१
०० २४	०० ४८	०१ ००	०१ २४	०१ ४८	०२ १२	०२ ३६	०२ ४८	०३ १२	०३ ३६	०४ ००	०४ २४	०४ ४८	०५ ००	०५ २४	०५ ४८	२
०० ३६	०१ १२	०१ ३०	०२ ०६	०२ ४२	०३ १८	०३ ५४	०४ १२	०४ ४८	०५ २४	०६ ००	०६ ३६	०७ १२	०७ ३०	०८ ०६	०८ ४२	३
०० ४८	०१ ३६	०२ ००	०२ ४८	०३ ३६	०४ २४	०५ १२	०५ ३६	०६ २४	०७ १२	०८ ००	०८ ४८	०९ ३६	१० ००	१० ४८	११ ३६	४
०१ ००	०२ ००	०२ ३०	०३ ३०	०४ ३०	०५ ३०	०६ ३०	०७ ००	०८ ००	०९ ००	१० ००	११ ००	१२ ००	१२ ३०	१३ ३०	१४ ३०	५
०१ १२	०२ २४	०३ ००	०४ १२	०५ २४	०६ ३६	०७ ४८	०८ २४	०९ ३६	१० ४८	१२ ००	१३ १२	१४ २४	१५ ००	१६ १२	१७ २४	६
०१ २४	०२ ४८	०३ ३०	०४ ५४	०६ १८	०७ ४२	०९ ०६	०९ ४८	११ १२	१२ ३६	१४ ००	१५ २४	१६ ४८	१७ ३०	१८ ५४	२० १८	७
०१ ३६	०३ १२	०४ ००	०५ ३६	०७ १२	०८ ४८	१० २४	११ १२	१२ ४८	१४ २४	१६ ००	१७ ३६	१९ १२	२० ००	२१ ३६	२३ १२	८
०१ ४८	०३ ३६	०४ ३०	०६ १८	०८ ०६	०९ ५४	११ ४२	१२ ३६	१४ २४	१६ १२	१८ ००	१९ ४८	२१ ३६	२२ ३०	२४ १८	२६ ०६	९

इति शुभम्

मुद्रक

श्यामसुन्दर मिश्र

डि-लक्स आर्ट प्रेस

२३, ताराचन्द दत्त स्ट्रीट कलकत्ता-१